ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 28 | जून -2026 | अंक - 06 | माउंट आबू | Rs.- 20

आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति की रक्षा पर महासम्मेलन

ओआरसी-गुरुग्राम(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में तीन दिवसीय अखिल भारतीय साधु-संत महासम्मेलन का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। "आध्यात्मिकता द्वारा सनातन संस्कृति की रक्षा" विषय पर आलोक जी ने कहा कि आध्यात्मिकता ही जीवन का वास्तविक सुख है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के जीवन में इसका स्वरूप नज़र आता है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व में आध्यात्मिक चेतना की जागृति सतयुग के आने की आहट पैदा कर रही है। उन्होंने आगे कहा कि संस्थान में किसी विशेष धर्म से नहीं बल्कि अनेक धर्मों के लोग सम्मिलित हैं। आत्मा ईश्वरीय गुणों का स्वरूप है। प्रत्येक व्यक्ति में इन ईश्वरीय गुणों का सम्मान करना ही ईश्वर का सम्मान करना है। उन्होंने ये भी बताया कि दो वर्ष पूर्व वे संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू में गए थे। जहाँ उन्हें अपार ऊर्जा का अनुभव हुआ। दिव्य शक्ति अखाड़ा,सहारनपुर से महामंडलेश्वर कमल किशोर जी महाराज ने कहा कि कर्म का सबसे बड़ा महत्व है। कर्म का फल अवश्य मिलता है। पूर्व में किए कर्मों के प्रभाव से हम ईश्वरीय स्मृति से ही मुक्त हो सकते हैं। ईश्वरीय प्रेम ही सर्व सुखों का आधार है। मुंबई से महामंडलेश्वर श्वामी प्रेमानंद गिरि जी महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ नारी शक्ति उत्थान का प्रमुख केंद्र है। उन्होंने ये भी कहा कि जहाँ संत हैं वहाँ बसंत है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान राजयोग के द्वारा विश्व में सनातन संस्कृति के पुनर्जागरण का भगीरथ कार्य कर रहा है। महामंडलेश्वर स्वामी शिव स्वरूपानंद जी महाराज,जोधपुर ने कहा कि सनातन संस्कृति का मूल अहिंसा है। अहिंसा परम धर्म है। उन्होंने कहा कि शान्ति के लिए क्रान्ति जरूरी है। सबसे बड़ी क्रान्ति वैचारिक क्रान्ति है। विचारों के शुद्धिकरण से ही शान्ति का उद्‌गम होता है। श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी कृष्णानंद जी महाराज,मथुरा ने कहा कि अध्यात्म सनातन धर्म की आत्मा है। बिना अध्यात्म के सनातन धर्म की कल्पना नहीं की जा सकती। आध्यात्मिकता से ही विश्व में शान्ति स्थापन हो सकती है। प्रथम वाल्मीकि आदि शंकराचार्य गिरधारी जी महाराज,अमृतसर ने कहा कि

- अखिल भारतीय साधु-संत महासम्मेलन
- ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में हुआ सफल आयोजन
- आध्यात्मिकता में ही जीवन का वास्तविक सुख है- आलोक कुमार
- आदि सनातन धर्म सभ्यता और दिव्यता का संदेश देता है- राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी
- देश के विभिन्न प्रांतों से पहुंचे सैकड़ों संत महात्मा

सनातन संस्कृति के महर्षि वाल्मीकि का विशेष महत्व है। क्योंकि उन्होंने श्रीराम के जीवन दर्शन से सनातन संस्कृति का परिचय दिया। हिंदू सेना के राष्ट्रीय महामंडलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद गिरि जी महाराज ने कहा कि धर्म केवल सनातन धर्म है। धर्म कभी किसी का अहित नहीं करता। आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी महाराज,मोदीनगर ने कहा कि अगर चेतना की जागृति नहीं है तो सोना और जागना तो केवल एक मशीन के समान है। हमारा मन हमारे जन्म का कारण है। इस अवसर पर संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि हिंसा केवल तलवार से ही नहीं होती। बल्कि मन और वचन से भी दूसरों को दुःख देना हिंसा है। उन्होंने कहा कि देवी-देवताओं को दिखाए गए अस्त्र-शस्त्र बाहरी हिंसा नहीं बल्कि मनोविकारों पर ज्ञान और योग के द्वारा विजय प्राप्त करने के सूचक हैं। आदि सनातन धर्म हमें सभ्यता और दिव्यता का पाठ पढ़ाता है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक शक्ति के लिए तपस्या जरूरी है। उन्होंने कहा कि जब सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जाती है तो नकारात्मक ऊर्जा स्वतः समाप्त हो जाती है। धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी,प्रयागराज ने कहा कि सनातन संस्कृति का पुनर्जागरण ही सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य है। जीबी पंत हॉस्पिटल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता ने अपने आध्यात्मिक जीवन के अनुभव सबके साथ साझा किए। राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,माउण्ट आबू ने भी सभा को संबोधित किया। मंच संचालन राजयोगिनी ब्र.कु. बीना एवं ब्र.कु. श्रीनिधि ने किया। कार्यक्रम में देशभर से सैकड़ों साधु-संतों सहित 800 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

मॉस्को में 'हिंदू स्वयंसेवक संघ' ने सीखा राजयोग

मॉस्को-रशिया। हिंदू स्वयंसेवक संघ भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समान अंतर्राष्ट्रीय संगठन है और यह हिंदू प्रवासी समुदाय पर ध्यान केंद्रित करता है। राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी को ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से परिचित होने और राजयोग की बुनियादी बातें सीखने के लिए मॉस्को स्थित एचएसएस के प्रमुख श्री क्षितिज ने नवरूज़ दिवस पर आमंत्रित किया। उन्होंने दीदी का स्वागत करते हुए कहा कि "दीदी जी, मेरा मानना है कि ब्रह्माकुमारीज़ के सदस्य दुनिया भर में कई तरह की अशांति और नकारात्मक ऊर्जा होने के बावजूद भी कार्य, जीवन और समाज में सकारात्मक और एकाग्र मानसिकता बनाए रखते हैं।" हमें खुशी है कि दीदी ने हमें राजयोग सिखाने के लिए आने की सहमति दी है।" कार्यक्रम की शुरुआत कुछ मिनट परमात्मा की याद से हुई। जिसके बाद सुधा दीदी ने उपस्थित एचएसएस सदस्यों के भाइयों को आत्मा और उसके स्वरूप के बारे में जानकारी दी तथा परमात्मा(ईश्वर) के स्वरूप को भी परिभाषित किया। सभी ने ब्रह्माकुमारीज व एचएसएस के कार्य को परस्पर विस्तार से जाना। जोकि दोनों का लक्ष्य मानवता के उत्थान से जुड़ा हुआ है। ब्रह्माकुमारीज संगठन और विश्व स्तर पर इसकी व्यापक गतिविधियों से परिचित हुए। इस दौरान विभिन्न विषयों पर प्रश्नोत्तर सत्र में राजयोग मेडिटेशन के बारे में रूचिपूर्वक गहनता से जाना और उसकी अनुभूति भी की। यहाँ पर एक अनोखा अनुभव हुआ कि मेडिटेशन में आँखें खुली रखके मेडिटेशन कराया गया। उन्हें यह भी समझाया गया कि ब्रह्माकुमारीज़ कैसे मानती हैं कि भारत का प्राचीन योग आधुनिक युग में दोहराया जा रहा है।

नवरूज़ : मॉस्को में नवदिवस का त्योहार

वसंत ऋतु का नव वर्ष, नवरूज़ शांति और मित्रता का त्योहार है और यह दुनिया भर के लाखों लोगों को एकजुट करता है। जैसा कि सर्वविदित है, इस त्योहार की जड़ें मध्य पूर्व और मध्य एशिया की प्राचीन परंपराओं में निहित हैं। 2009 में, यूनेस्को ने "नवरूज़" को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूचि में शामिल किया और 2010 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21मार्च को अंतर्राष्ट्रीय नवरूज़ दिवस घोषित किया। वसंत विषुव का वह दिन, जब दिन और रात संतुलन में होते हैं और एक-दूसरे की ओर देखते हैं, नवरूज़ का जन्म होता है। यह एक नया दिन, एक नया साल और एक नया जीवन है जो नई आशाएं लेकर आता है। यह दिन विश्वभर में 3 करोड़ से अधिक विशेष रूप से ईरान, अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान, अज़रबैजान, तुर्की और कुर्द तथा मध्य एशियाई समुदायों द्वारा मनाया जाता है। मॉस्को हाउस ऑफ नेशनैलिटीज में "राष्ट्रीय अवकाश" परियोजना के अंतर्गत नवरूज़ का उत्सव रूस के जन एकता वर्ष को समर्पित था।

योग बने आदत, तो जीवन बने शानदार

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

आज की तेज़ रफ्तार और प्रतिस्पर्धात्मक जीवनशैली में व्यक्ति शारीरिक थकान, मानसिक तनाव और भावनात्मक असंतुलन से जूझ रहा है। ऐसे समय में योग केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि संतुलित और स्वस्थ जीवन जीने की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। यदि योग को हम केवल एक दिन की गतिविधि न मानकर अपनी आदत बना लें, तो जीवन वास्तव में शानदार बन सकता है।

योग : केवल अभ्यास नहीं, जीवनशैली

योग का अर्थ है - जुड़ना। यह जुड़ाव शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है। अधिकांश लोग योग को केवल शारीरिक व्यायाम या आसनों तक सीमित समझते है, जबकि वास्तव में योग एक सम्पूर्ण जीवनशैली है। यह हमें न केवल स्वस्थ शरीर देता है, बल्कि एक शांत, स्थिर और सकारात्मक मन भी प्रदान करता है।

आदत का विज्ञान और योग

मनुष्य का जीवन उसकी आदतों से निर्मित होता है। जो कार्य हम नियमित रूप से करते हैं, वही हमारे संस्कार बन जाते हैं। योग का भी यही सिद्धान्त है - यदि इसे निरंतर अभ्यास में लाया जाए, तो यह हमारे जीवन का स्वाभाविक हिस्सा बन जाता है।

जैसे हम प्रतिदिन भोजन करते हैं, वैसे ही यदि हम प्रतिदिन कुछ समय योग को दें, तो यह हमारी दिनचर्या में सहज रूप से शामिल हो जाता है। धीरे-धीरे शरीर इसकी लय को स्वीकार कर लेता है और मन भी इसके बिना अधूरा महसूस करने लगता है।

शारीरिक और मानसिक लाभ

नियमित योगाभ्यास शरीर की विभिन्न प्रणालियों को संतुलित करता है। यह श्वसन तंत्र को सुदृढ़ बनाता है, रक्त संचार को बेहतर करता है और शरीर की ऊर्जा को संतुलित करता है। इससे शरीर में लचीलापन, शक्ति और सहनशीलता बढ़ती है।

मानसिक स्तर पर योग तनाव,चिंता और अवसाद को कम करने में अत्यंत प्रभावी है। यह मन को स्थिरता और स्पष्टता प्रदान करता है। जब मन शांत होता है तो निर्णय लेने की क्षमता भी बेहतर हो जाती है और व्यक्ति हर परिस्थिति का सामना संतुलित रूप से कर पाता है।

राजयोग - मन का प्रबंधन

योग के साथ यदि राजयोग का समावेश हो जाए, तो इसका प्रभाव और गहरा हो जाता है। राजयोग हमें अपने मन पर नियंत्रण रखना सिखाता है। यह हमें ये समझने में मदद करता है कि हमारे विचार ही हमारे कर्मों और जीवन की दिशा तय करते हैं।

जब मन सशक्त और सकारात्मक होता है, तो हम अपने लक्ष्य के प्रति अधिक जागरूक और प्रतिबद्ध रहते हैं। टालमटोल, आलस्य और नकारात्मकता धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

सुबह की शुरुआत : सफलता की कुंजी

योग को आदत बनाने के लिए सुबह का समय सबसे उपयुक्त माना गया है। ब्रह्ममुहूर्त या सुबह का शांत वातावरण मन को एकाग्र और ऊर्जा से भर देता है। यदि दिन की शुरुआत सकारात्मक विचारों, प्राणायाम और ध्यान से हो, तो पूरा दिन अधिक उत्पादक और संतुलित रहता है।

यह अभ्यास मन रूपी "बैटरी" को चार्ज करता है जिससे हम दिनभर की चुनौतियों का सामना सहजता से कर पाते हैं।

अतः योग कोई तात्कालिक उपाय नहीं, बल्कि एक स्थायी समाधान है। इसे केवल विशेष अवसरों तक सीमित रखना इसके वास्तविक महत्व को कम कर देता है। आवश्यकता है इसे अपनी आदत, संस्कार और जीवनशैली का हिस्सा बनाने की।

जब योग हमारे जीवन में नियमित रूप से शामिल हो जाता है तब न केवल हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि मन शांत और आत्मा संतुष्ट होती है। यही संतुलन हमें एक शानदार, सफल और सार्थक जीवन की ओर ले जाता है।

कर्म करते हुए भी हम साधना में रहें

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

वर्तमान समय साधनों के विस्तार में बहुत चले गये हैं और सार जो साधना है उसमें थोड़ी कमी पड़ गई है। अभी बाबा हमसे चाहता है कि बच्चों की साधना ऐसी पक्की हो जो कोई भी साधन हमको हिला न सकें। मान लो अभी हम शांत में बैठे हैं, लाइट चली गई। तो ऐसे नहीं यही संकल्प चलता रहे कि लाइट क्यों गई? लाइट के दफ्तर वाले अच्छे नहीं हैं, काम करते ही नहीं, आजकल के हैं ही ऐसे... परन्तु मेरा काम यह नहीं है कि हम उनका सोचें। ऐसे फालतू कॉमन संकल्प हमारे चल गये तो साधन ने मेरे मन की स्थिति को खींच लिया। मन की स्थिति एकाग्र नहीं हुई, तो साधना पॉवरफुल नहीं रही। साधना तो हम सब करते हैं और साधना चलते-फिरते भी हो सकती है लेकिन साधन के वश न हो, स्थिति कमल पुष्प समान हो।

कई बार हम कर्म कॉन्शियस हो जाते हैं, बॉडी कॉन्शियस भी नहीं होते, सोल कॉन्शियस भी नहीं हैं, कर्म कॉन्शियस हो जाते हैं जैसे कि यह काम ऐसे करना है, यह किया, यह ठीक हुआ, यह नहीं हुआ... ऐसे नैचुरल कर्म कॉन्शियस का संकल्प चलता है लेकिन जिस कर्म का अभ्यास है वह कर्म करते हुए हम साधना में रहें। हाथ-पांव का जो काम है, वह बहुत हल्का है तो उसमें बुद्धि को शिवबाबा के तरफ एकाग्र होके लगा सकते हैं। थोड़ा भी टाइम मिला तो हम अपनी साधना में गुम हो सकते हैं। गुम होना माना ऐसे नहीं कि सिर्फ अशरीरी हो जाएं, लेकिन इसके साथ कन्ट्रोलिंग पॉवर भी चाहिए। अगर हमारी साधना अच्छी है तो कोई भी उल्टा काम मेरे से नहीं हो सकता है।

जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल के समय हम टाइम निकालते हैं, ऐसे हम बीच-बीच में थोड़ा समय सभी निकालें तो साधना का अनुभव कर सकते हैं लेकिन इसमें अटेन्शन और अभ्यास चाहिए, मन पर कन्ट्रोलिंग पॉवर चाहिए। लेकिन कन्ट्रोलिंग पॉवर तब आयेगी जब यह मुझे निश्चय हो कि मैं मालिक हूँ, आत्मा हूँ। उस मालिकपने के नशे से आप स्वयं को कन्ट्रोल कर सकते हो।

जिनका एक बाबा से दिल का प्यार है उनको याद की मेहनत नहीं करनी पड़ती। बस, बाबा कहा और बाबा में समा गये, यानी लव में लीन हो गये। यह लवलीन अवस्था ऐसी है जो दो अलग-अलग होते भी एक हैं। लवलीन माना लव में एकदम समा जायें और कुछ नज़र नहीं आये। जैसे सागर में खो गये तो वह लवलीन अवस्था जो है वह प्यारी और ऊंची है। कर्म का बन्धन चाहे पास्ट का, चाहे वर्तमान का लेकिन खींचे नहीं। कर्म करें लेकिन न्यारे होकर कर्म भी पूरा करें और जिसके साथ कर्म में आते हैं, उसके भी प्यारे बनें और बाबा के भी प्यारे बनें। इसे ही विदेही अवस्था भी कहा जाता है।

अभी भी साधना करने का समय है। लेकिन जब हलचल शुरू हो जाएगी तो उस हलचल का सामना करने में भी टाइम देना पड़ेगा। उस समय अभ्यास नहीं होगा फिर साधना नहीं कर सकेंगे और हलचल में टिक नहीं सकेंगे इसीलिए बाबा बार-बार भिन्न-भिन्न रूप से इशारा दे रहा है। एक तो कर्म के बन्धनों को चेक करो, एकदम मैं क्लीन हूँ? किसी भी तरफ लगाव तो नहीं है? कोई गुण या कोई स्वभाव के प्रति किसी से विशेष आकर्षण तो नहीं है? सच्ची और पॉवरफुल साधना के लिए हमारे मन का लगाव कहीं भी नहीं होना चाहिए। मन बुद्धि को क्लीयर रखना - यह साधना के लिए बहुत जरूरी है।

शान उसी में है जो हीरो पार्ट बजाये

बाबा ने हम सबको ब्राह्मण जीवन के नियम संयम बताए हैं। अगर हम चलते-फिरते, खाते-पीते हैं तो यह शोभता नहीं है। खुशी में शान्ति से बैठकर याद में खाओ-पीओ तो थोड़े में ही ताकत मिल जाती है। तो बड़े प्यार से, बड़ी एकाग्रता से ब्रह्माभोजन करना है क्योंकि ब्रह्माभोजन बहुत पॉवरफुल है, इसके लिए कहते हैं कि देवताएं भी तरसते हैं। सतयुग में देवताओं को यह ब्रह्माभोजन थोड़े ही मिलेगा। ऐसा भण्डारा और ऐसे भोजन बनाने वाले भी नहीं होंगे। भोग भी नहीं लगेगा। इसलिए अभी भोग लगाने वाले को भी एक्यूरेट लगाना है। बनाने वाले को भी एक्यूरेट बनाना है और खाने वाले को भी उसी महत्व से खाना है कि हम ब्रह्माभोजन खा रहे हैं।

जो स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण हैं उन्हें स्मृति रहती हम सो, सो हम... हम सो थे वो अभी हम बन रहे हैं। इस शरीर में होते हुए चेक करो कि ज्ञान में आने से पहले मेरा संकल्प कैसा था? अब कैसा है? वन्डरफुल। रहम, सच्चाई, प्रेम संकल्प में आ गया है। अगर मेरे संकल्प में रहम नहीं है तो वो कोमल दिल है या कठोर दिल है। हमारे दिल में रहम, सच्चाई और प्रेम हो तो संकल्प दृष्टि और कर्म भी ऐसे ही होंगे।

राजयोगिनी दादी जानकी जी

उसमें अगर कोई साधारणता है तो चलने-फिरने, सोचने में भी साधारणता होगी। भले बुद्धि बहुत अच्छी है पर रहमदिल नहीं है, किसके दिल को जल्दी समझ करके बाबा से उनको मदद दिलावे वो अन्दर से बुद्धि काम नहीं करती है।

निश्चय और भावना दोनों जब कम्बाइंड हैं तो विश्वास जल्दी बैठ जाता है। कहेगा सुना था कुछ और, देखा कुछ और। कइयों का यहाँ आ करके, देखने से, अनुभव करने से विश्वास बैठ जाता है क्योंकि रहम, स्नेह, सच्चाई का अनुभव किया, जो दुनिया में कहीं से भी किसको यह अनुभव हो नहीं सकता। कुछ न कुछ स्वार्थ भाव होगा। वो भले बाप-बेटा हो, उसकी मर्जी से नहीं चला तो कहेगा तू मेरा बेटा नहीं है या तो बाप, बाप नहीं है। वहाँ तो बाप-बेटे का सम्बन्ध जुटता है, पर भाई-भाई, बहन-भाई का सम्बन्ध भी जुटता है। किसी बाहर वालों को कहो कि तुम मेरा भाई हो तो उनको इतनी खुशी होती है, बात मत पूछो। पूरा ज्ञान सुनने से पहले उनको इसी एक शब्द से विश्वास होने लगता है। तो हमारा बहन-भाई का जो रिश्ता है वो बड़ा सुखदाई है। भाई-भाई की दृष्टि से सृष्टि महासुखकारी बन जाती है।

भाई-भाई की दृष्टि का कोर्स बड़ा है, इसमें जो पास हुआ उसका बेड़ा पार। जैसे मम्मा समान सदैव रूहानियत में रहने से बाबा अपनी शक्ति भर देता है तब तो आत्मा में शिव की शक्ति भरेगी और शिवशक्ति के रूप में गायन होगा। शिव मेरा साथी तो क्या बल्कि शिव की शक्ति मेरे पास है। तो साक्षी हो करके पार्ट प्ले करना, यह हीरो पार्टधारी की निशानी है। हीरो जो होता है, वो हर पार्ट के बीच में हाज़िर होता है फिर भी उसका सबसे न्यारा पार्ट होता है इसलिए सबको अच्छा लगता है।

हमें पास विद ऑनर होना है तो ऐसा श्रेष्ठ पार्ट बजाना है। ऐसे नहीं पास होने जितनी मार्क्स मिली तो खुश हो जाये। शान उसी में है जो हीरो पार्ट बजाये। कोई भी बात हुई साक्षी हो करके पार्ट प्ले किया, बाबा साथी है, मेरे को साक्षी बना करके अच्छा पार्ट प्ले करना सिखाया है। हम हर पार्टधारी के पार्ट में साक्षी हैं। तो साक्षीपन की स्टेज पर रहते अपना पार्ट बजाना और शिव बाप को साथी बना देना तब कहेंगे शिव और शक्ति दोनों कम्बाइंड हैं।

हरेक सूक्ष्म कमज़ोरी के संकल्प को बाबा के सामने दान कर दो

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

बाबा हम बच्चों को कहता बच्चे तुम मेरे होलिएस्ट, हाइएस्ट और रिचेस्ट बच्चे हो। साथ-साथ हमको ऊंची चोटी पर ले जाने के लिए रोज़ बुद्धि की यह ड्रिल कराता कि बच्चे एक सेकण्ड में इस साकारी दुनिया से पार आकारी और निराकारी दुनिया में चले जाओ। ड्रिल करो - अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी और अभी-अभी निराकारी।

सेकण्ड में उड़ती कला का अनुभव करने के लिए बुद्धि इतनी हल्की हो जो किसी भी घड़ी इस देह से न्यारी बन जावे। बार-बार यह बात बाबा सुनाता है कि तुम अपने बुद्धि पर बोझ अनुभव नहीं करो। कार्य व्यवहार करो परन्तु अपने को मैं करता हूँ या मेरा यह काम है, यह मैं और मेरे का बोझ अपने सिर पर नहीं रखो। जिम्मेवार बाबा है, हम निमित्त उनकी श्रीमत पर चलते चलें।

समय तीव्र गति से चलता रहता, तो हमें भी ऐसा ही तीव्रगति से अपने को बाबा के इशारों अनुसार पुरुषार्थ करना है और पुरुषार्थ का लक्ष्य है सिर्फ स्वयं ही अटेन्शन रखो। अटेन्शन है तो बुद्धि सहज अनुभव करेगी, अटेन्शन होगा तो सम्पन्नता तक पहुंचने में मेहनत या बोझ अनुभव नहीं होगा। इसके लिए समय प्रति समय जो सम्पन्न बनने के लिए बाबा ने ईशारे दिए हैं वह याद रखो, उन पर मनन चिंतन करो।

सबसे पहले हर एक अपने आपसे पूछो कि स्वयं में फेथ है कि मैं पुरुषार्थ कर लास्ट सो फास्ट आऊंगा? मैं ही सम्पन्न बना था और बनूँगा? मेरे संस्कार कहा अथवा पुराने कोई भी बंधन हैं, मैं उन सब संस्कारों को, बन्धनों को पुरुषार्थ कर परिवर्तन कर सकता हूँ?

सूक्ष्म में भी यह संकल्प तो नहीं आता कि ऐसी स्थिति तो मेरे लिए बड़ी मुश्किल है! आज से हरेक इस सूक्ष्म कमज़ोरी के संकल्प को बाबा के सामने दान कर दो। जबकि बाबा कहता है तुम बच्चों से मेरा वायदा है कि तुम एक कदम आगे बढ़ो तो मैं दस कदम क्या 100 कदम आगे आऊंगा। "हिम्मते बच्चे मददे बाबा।" तुम निश्चयबुद्धि बनो तो विजय अवश्य समाई हुई है।

सबसे पहला चाहिए स्वयं ही स्वयं पर सम्पूर्ण फेथ। फुल फेथ रखो तो बाबा की मदद ऑटोमेटिक मिलेगी। यह भी एक बहुत बड़ा वरदान मिल जाता। तो पहले स्वयं पर फेथ जो फिर बाबा के ऊपर फेथ हो। साथ-साथ यह भी फेथ चाहिए कि हम कल्प पहले वाले वही बाबा के बच्चे हैं जो कल्प पहले भी विजयी बने हैं, जिसका यादगार वैजयन्ती माला है।

बाबा ने हमें तीव्र पुरुषार्थ कराने लिए समय दिया है, जैसे यूनिवर्सिटी में भी टाइम होता कि यह कोर्स इतने समय में पूरा करना है फिर पेपर होगा। तो हमें भी बाबा सम्पन्न बनने के लिए टाइम देता है। फिर बीच-बीच में पेपर भी लेता है। उस पेपर में पास होने के लिए अमृतवेले जब उठते हैं तो अपनी सम्पन्नता की स्टेज को याद करो।

हमारे सामने सम्पन्नता की स्टेज है - ब्रह्मा बाबा। साकार में भी ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बन प्रैक्टिकल में फरिश्ता स्थिति का हम सबको अनुभव कराते रहे और अभी उसी सम्पन्न फरिश्ता रूप से अव्यक्त वतन में भी हम बच्चों से रूहरिहान करते अथवा बाप-दादा मिलकर इस साकार दुनिया में भी आते। तो सम्पन्नता का एग्जांपल साकार है, साकार सो आकार बाबा, निराकार बाबा।

हमें भी ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनना है। तो हमारी सम्पूर्णता के समीपता की स्थिति है कि पहले हम अपने को फरिश्ता बनावें। फरिश्ता अर्थात् जो इस देह और देह के बन्धन हैं, उन बन्धनों से मुक्त। जो भी पुराने संस्कार-स्वभाव हैं, दृष्टि वृत्ति है, वह सब हमारी परिवर्तन हो जाए। तो इन सबमें कितने परसेन्ट परिवर्तन हुआ है? मास्टर बन खुद ही खुद चेक करें क्योंकि यह पुराने स्वभाव-संस्कार ही हमारे बंधन हैं और इन्हीं को परिवर्तन करना उसको ही कहेंगे बन्धनमुक्त अर्थात् जीवनमुक्त बनना।

सबसे पहले खुद से पूछना है कि इस जीवन में मैं आत्मा सभी सूक्ष्म व स्थूल बन्धनों से स्वतंत्र हूँ? मुक्त हूँ या मेरे संस्कार-स्वभाव जंजीर की तरह बन्धन में रखते हैं? ज़रा भी कोई बन्धन होगा तो कभी भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं होगा।

मम्मा का जीवन
एक चलता-फिरता आध्यात्मिक पाठशाला

मम्मा का जीवन हमें सबसे पहले यह सिखाता है कि आध्यात्मिकता केवल पुस्तकों या वचनों तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसे जीवन में उतारना ही सच्ची साधना है। परमात्मा शिव के ज्ञान को उन्होंने केवल सुना नहीं, बल्कि उसे अपने प्रत्येक कर्म में ढाल लिया। यही कारण था कि उनका हर व्यवहार, हर निर्णय और हर शब्द एक गहरी आध्यात्मिक सीख बन जाता था।

छोटी आयु में ही मम्मा ने जिस प्रकार मातृत्व का स्वरूप धारण किया, वह अद्भुत था। वे हर आत्मा को स्नेह, शक्ति और मार्गदर्शन देती थीं। उनके भीतर एक ऐसी दिव्य ममता थी, जो हर किसी को अपनेपन का अनुभव कराती थी। इस कारण उन्हें "जगदम्बा" कहा गया - एक ऐसी माता, जो सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं की सच्ची पालना करती है।

मम्मा को "सरस्वती" भी कहा जाता है, क्योंकि वे ज्ञान की गहराइयों में जाकर उसे अत्यंत सरल और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करती थीं। कठिन से कठिन आध्यात्मिक रहस्यों को भी वे इतने सहज ढंग से समझाती थीं कि एक सामान्य व्यक्ति भी उसे समझकर अपने जीवन में उतार सके। वे न केवल ज्ञान सुनाती थीं, बल्कि उसके अर्थ को जीवन से जोड़कर समझाती थीं।

उनका जीवन इस बात का जीता-जागता उदाहरण था कि एक सच्चा विद्यार्थी वही है जो निरंतर सीखता भी है और सिखाता भी है। मम्मा स्वयं भी निरंतर आत्मचिंतन और योग में लीन रहती थीं। वे प्रातःकाल उठकर तपस्या करती थीं और अपने भीतर की हर कमजोरी को समाप्त करने का पुरुषार्थ करती थीं। इस प्रकार वे एक श्रेष्ठ विद्यार्थी होने के साथ-साथ एक महान शिक्षक भी थीं।

> ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के इतिहास में जगदम्बा सरस्वती(मम्मा) का जीवन एक अद्भुत मिसाल है। वे केवल ज्ञान सुनाने वाली आत्मा नहीं थी, बल्कि स्वयं उस ज्ञान की सजीव प्रतिमा थीं। उन्होंने अपने जीवन को इस प्रकार जिया कि हर कदम, हर कर्म और हर वचन एक आध्यात्मिक शिक्षा बन गया। सचमुच उनका सम्पूर्ण जीवन एक 'चलता-फिरता आध्यात्मिक पाठशाला' था, जहाँ वे स्वयं भी सीखती थीं, दूसरों को सिखाती थीं और हर आत्मा को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देती थीं।

प्रजापिता ब्रह्मा के साथ उनका गहरा संबंध और समर्पण भी उनके जीवन की विशेषता थी। "बाबा का कहना और मम्मा का करना" - यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि उनके जीवन की सच्चाई थी। उन्होंने हर श्रीमत को पूरी निष्ठा से अपनाया और दूसरों को भी उसी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

मम्मा का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि हर परिस्थिति एक सीख है। चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, उन्होंने कभी अपने लक्ष्य से समझौता नहीं किया। सच्चाई, धैर्य और आत्मविश्वास के साथ उन्होंने हर चुनौति का सामना किया और दूसरों को भी यही सिखाया कि जीवन में स्थिर रहकर आगे बढ़ना ही सच्ची सफलता है।

उनकी विशेषता यह थी कि वे केवल बोलती नहीं थीं, बल्कि अपने जीवन से उदाहरण प्रस्तुत करती थीं। वे जो कहती थीं, वही करती थीं, और जो करती थीं, वही सिखाती थीं। इसीलिए उनका जीवन एक खुली किताब की तरह था, जिससे हर कोई सीख सकता था।

मम्मा का सम्पूर्ण जीवन सेवाएँ, त्याग और समर्पण का प्रतीक था। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन को पूरी तरह से ईश्वरीय सेवा में समर्पित कर दिया। वे हर आत्मा के कल्याण के लिए तत्पर रहती थीं और हर किसी को आत्मिक उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती थीं।

आज, जब हम मम्मा के जीवन को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपने जीवन को सचमुच एक "जीवंत आध्यात्मिक पाठशाला" बना दिया था। उनका हर कदम, हर शब्द और हर भावना एक गहरी शिक्षा से भरी हुई थी। वे स्वयं भी एक आदर्श विद्यार्थी थीं और एक महान गुरु भी।

उनके जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि यदि हम भी अपने जीवन को सही दिशा में ढालें, परमात्मा की श्रीमत पर चलें और अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाएं, तो हमारा जीवन भी एक प्रेरणादायी उदाहरण बन सकता है।

अंततः, मम्मा का जीवन हमें यही संदेश देता है कि सच्ची आध्यात्मिकता वही है, जो हमारे विचारों, वचनों और कर्मों में झलके। जब हम अपने जीवन को एक पाठशाला मानकर हर दिन सीखने और सिखाने का प्रयास करते हैं, तब हमारा जीवन भी सार्थक और सफल बन जाता है।

ऐसी महान जगदम्बा, हमारी प्यारी मम्मा को हृदय से कोटि-कोटि नमन, जिनका जीवन आज भी हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

मेहसाणा-गुज.। मीडली पैलेस में गुजरात जोन के सभी जोन इंचार्ज एवं सब जोनल कमेटी मेंबर्स की बहनों के लिए आयोजित दो दिवसीय अलौकिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी। मौके पर उपस्थित रहे राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी,अहमदाबाद,महादेव नगर सब जोन संचालिका, राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी,आंबावाडी सब जोन संचालिका, राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी,गुजरात जोन डायरेक्टर, ब्र.कु. रंजन बहन,वलसाड, ब्र.कु. तृप्ति बहन,भावनगर, ब्र.कु. प्रभा दीदी,भरूच, ब्र.कु. पूर्णिमा दीदी,नडीयाद, ब्र.कु. नेहा बहन,मणिनगर,अहमदाबाद, राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,जूनागढ़ व पोरबंदर, ब्र.कु. ज्योति बहन,हिम्मतनगर तथा ब्र.कु. गीता बहन,नवसारी।

इंदौर-ज्ञान शिखर(म.प्र.)। स्टेट वुमेन्स प्रेस क्लब के द्वारा आयोजित विशेष समारोह में इंदौर क्षेत्र की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 'शक्ति अवॉर्ड' प्रदान कर सम्मानित करते हुए मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश न्यायमूर्ति विजय कुमार शुक्ला। साथ हैं वुमेन्स स्टेट प्रेस क्लब की अध्यक्षा श्रीमती शीतल राय, लक्ष्मी नारायण कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी डायरेक्टर डॉ. संध्या चौकसे एवं राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी।

भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी(म.प्र.)। इंटरनेशनल योगिनी अवॉर्ड समारोह में योग सेवा सम्मान इंटरनेशनल योगिनी अवॉर्ड इंडियन योगिनी संगठन एंड विशिष्मा एडयुम्लाइफ द्वारा ब्र.कु. डॉ. रीना बहन को आध्यात्मिक सेवा और योग के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए योग सेवा सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया। मौके पर मौजूद रहे डॉ. ईश्वर वी. बसवारेड्डी,डायरेक्टर एम.डी.वाय.एन.आई, श्रीमती रेणुका मिश्रा,एडवाइजर फाइनेंस एम.एच.आई. भारत सरकार, आर.एच. लता जी, इंडियन योगिनी संगठन फाउंडर और ऑर्गेनाइजर तथा अन्य सम्माननीय हस्तियां।

बीदर-कर्नाटक। शहर के सपना कंवेंशन हॉल में स्वास्थ्य और रोग के लिए एकीकृत दृष्टिकोण "एलोपैथी और आयुर्वेद" विषय पर एक संगोष्ठी का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए हैदराबाद के विश्व विख्यात हृदय सर्जन डॉ. रविशंकर पोलीसेट्टी, जिला वाणिज्य और उद्योग मंडल अध्यक्ष बी.जी. शेटकर, एनके जबशेट्टी आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल चंद्रकांत हालिल, सपना ग्रुप के एमडी वीरशेट्टी पाटिल, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. शोभा भूमे,देगलूर, व्यवसायी डॉ. नीता शैलेंद्र बेलदाले, राजयोगिनी ब्र.कु. सुमंगला दीदी,बेदलापुर राजऋषिवन निर्देशिका एवं रामपुरे कॉलोनी सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी।

मुंबई-मुलुंड(महा.)। बागेश्वर धाम के संस्थापक तथा सनातन धर्म संस्कृति के प्रचारक धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री से स्नेह मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वर्षा बहन, ब्र.कु. गौरी एवं डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

चरोदा-छ.ग.। मानसरोवर विद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में आमंत्रित ब्र.कु. शिवानी को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए समाजसेवी सुमित जैन।

ब्र.कु. शिवानी बहन,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

अपना सुख-दुःख कोई और नहीं, हम ही रचते हैं...

हम सभी के संस्कारों को नहीं समझ सकते। जो संस्कार मेरे पास नहीं होगा, मैं उसे कभी समझ नहीं सकती। तो हमें समस्या ये होती है कि आप ऐसा कैसे कर सकते हो, यह मैं समझ नहीं पाता। जबकि समझने से अच्छा है कि हम स्वीकार कर लें कि उनका संस्कार अलग है। समझना मतलब मैं आपके संस्कारों को अनुभूत करूं। इस समझना शब्द को हटाएं और उसको स्वीकार से बदल दें।

हम आहत होते हैं रिश्तों में। किसी ने कुछ ऐसा किया, कुछ करा, जो मेरे अनुसार नहीं था तो मैंने मन में चोट निर्मित कर ली - यू हर्ट मी। हम सभी के पास एक नाम है, जिसने आपको आहत किया था कभी। अब पता करते हैं किसने हमें हर्ट किया। जैसे मैं बोल रही हूँ और कोई उठकर बाहर चला जाए। मैंने अपेक्षा की थी कि कोई बीच में से उठकर नहीं जाएगा। अगर कोई उठकर जाता है तो उनके पास उसके लिए कोई न कोई कारण होगा। लेकिन मैंने सोच बना ली कि उन्होंने मेरा अपमान किया। हम चीज़ों को इसी तरह से रिकॉर्ड करते हैं मन में। फिर हम कहते हैं कि इसने मेरा तिरस्कार किया, उसने मेरी अवमानना की। जबकि लोग सिर्फ वही कर रहे हैं जो उनको सही लगता है। उसके लिए उनके पास कारण है। लेकिन क्योंकि उनका कर्म हमें सही नहीं लगता, इसलिए हमने मन में रिकॉर्ड कर दिया कि उन्होंने मेरा अपमान किया।

लोगों के जो संस्कार हैं, उसके अनुसार वो कर रहे हैं। लेकिन उनको देखते हुए हम अपने मन में क्या रिकॉर्ड करते हैं, वो हमारा चयन है। मान लें कि किसी को देखकर मैंने अपने मन पर यह दर्ज कर लिया कि उन्होंने मेरा अपमान किया। किसी दूसरे अवसर पर उन्हें देखा तो मेरी धारणा पहले ही बनी हुई थी। तो मैंने फिर से यह विचार रच दिया कि यह व्यक्ति मेरा अपमान करता है। तब यह विचार मेरा संस्कार बनता चला जाता है। हमें बहुत ही सचेत रहना चाहिए कि हम मन में क्या दर्ज कर रहे हैं। एक और उदाहरण देखें। आपने सुबह नाश्ते में कुछ बहुत अच्छी चीज़ बनाई। आप छह बजे से मेहनत कर रही थीं। पतिदेव आये। डायनिंग टेबल पर बैठे। एक हाथ में फोन, एक हाथ में पेपर। कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं दी। आपने पूछा, कैसा है खाना? तो उन्होंने कह दिया, अच्छा है, लेकिन मेरी मम्मी जितना अच्छा नहीं बना। अब वो तो यह बात बोलकर चले गए। लेकिन आपके मन के अन्दर अब शुरू हो गया - मैं सुबह छह बजे उठी, रात को नाइट ड्यूटी करके आई, इनके लिए इतना बनाया। इस घर में तो मेरी कोई वैल्यू ही नहीं है। कितनी भी मेहनत कर लो ये सुनने को मिलता है ऊपर से। कोई फायदा ही नहीं है इनके साथ।

ये सारी बातें कौन बोल रहा है? आपका मन ही ना? उन्होंने एक लाइन बोली थी, आपने कितनी लाइन बोल दीं! फिर मन इतना भारी हो गया तो मम्मी को फोन किया, बहन को फोन किया, फ्रेंड को फोन किया, और सबको पूरी कथा सुनाई। ये सारा कुछ करके अपने मन का दर्द ही और बढ़ाया। चोट किसने रची थी? और चोट को ठीक करने के बजाय उलटे उसी को कौन बढ़ाते रहा? साक्षी होकर इस बात पर विचार कीजिएगा।

राजगीर-बिहार। नालंदा यूनिवर्सिटी में आयोजित दूसरे दीक्षांत समारोह में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से स्नेह भरी मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुपम बहन। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. जवाहर तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। स्थानीय पावन स्थल 'भैरव बाबा लोक' में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित एक विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम में उपस्थित रहे उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला, लोक निर्माण विभाग,पूर्व कार्यपालन यंत्री के.के. गर्ग, विधायक प्रतिनिधि विवेक दुबे, लायंस क्लब के पदाधिकारी अतुल जैन, डॉ. विवेक थापा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता दीदी, ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. सुषमा, ब्र.कु. जगदीश, समाजसेवी अंशु तिवारी तथा अन्य।

अलीराजपुर-म.प्र.। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं जिला प्रभारी मंत्री संपतिया उइके को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. माधुरी एवं ब्र.कु. ज्योति। साथ है अनुसूचित जाति कल्याण मंत्री नागर सिंह चौहान एवं भाजपा जिला अध्यक्ष संतोष परवाल।

मुंबई-सांताक्रूज वेस्ट(महा.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित केदारनाथ मंदिर की झांकी के उद्घाटन कार्यक्रम में मौजूद रहे सांताक्रूज उपक्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मीरा दीदी, डॉ. राज मुखर्जी,एमडी,शिकागो, पूर्व डिप्टी मेयर व कॉर्पोरेटर अलका केरकर, लेजिस्लेटिव काउंसिल के सदस्य पंकज भुजबल, रूप रंग डेकोरेटर्स के डायरेक्टर उमेश शेठ, कॉर्पोरेटर हेतल बेन गाला, भजनलाल डेयरी फार्म के मालिक भजनलाल, लक्ष्मी नारायण मंदिर के मुख्य पंडित भार्गव जी तथा अन्य।

बालोद-छ.ग.। शिवदर्शन मेले का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा चौधरी, भाजपा प्रदेश मंत्री श्रीमती संध्या पारगनिया, माहेश्वरी समाज अध्यक्ष श्रीमती प्रेमा काबरा, उपाध्यक्ष श्रीमती संगीता टुवानी, महार समाज प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती तुलसी डोंगरे, कुर्मी समाज अध्यक्ष श्रीमती प्रीति आवाल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विजयलक्ष्मी एवं ब्र.कु. रीटा,दुर्ग।

महुडी-गुज.। "संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन" अभियान के अंतर्गत वृद्धाश्रम के बुजुर्गों के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अवतार,ब्र.कु. विरेंद,ब्र.कु. उर्मिला,माउंट आबू, ब्र.कु. मनीषा, ओल्ड एज होम के ट्रस्टी भूपेंद्र चावड़ा, प्रवीण चावड़ा तथा अन्य।

बैतूल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ भाग्यविधाता भवन में आयोजित त्रिदिवसीय 'वाह ज़िंदगी वाह' कार्यक्रम के समापन दिवस पर प्रो. ई.वी. गिरीश,मुंबई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी, केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गा दास उइके, प्रधान जिला एवं सत्र के न्यायाधीश दिनेश चंद्र थपलियाल, प्रधान कुटुंब न्यायालय के न्यायाधीश शिव बालक साहू, प्रथम श्रेणी जिला न्यायाधीश सुरेश यादव, तहसीलदार गोवर्धन पाठी, भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार, डॉ. पुष्पलता सावले, डॉ. शैला मुले, डॉ. कैलाश वर्मा सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही।

तारापुर-बोईसर(महा.)। होली के पावन पर्व पर विराज इंटरनेशनल स्कूल में 'आत्मा का इंद्रधनुष' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी,रशिया। साथ हैं ब्र.कु. जागृति, ब्र.कु. हेमा, ब्र.कु. नम्रता एवं ब्र.कु. दीना।

भिलाई-से.7(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से पीस ऑडिटोरियम में आयोजित सिंधी समाज के आध्यात्मिक सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. महेश,रायपुर, उपस्थित पदाधिकारी एवं अन्य सदस्य।

सूरत-बालाजी रोड(गुज.)। सेवाकेन्द्र की सिल्वर जुबली तथा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'वुमेन-एन एजेंट ऑफ चेंज' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व मेयर अस्मिता शिरोया, खुशालदास ज्वेलर्स की शीतल जी, श्री गणेश उत्सव समिति के कार्यकारी प्रमुख अनिल भाई बिस्किटवाला, मोटिवेशनल स्पीकर एवं सिंगर ब्र.कु. डॉ. दामिनी बहन, मोटा वराछा एवं वेलंजा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. फाल्गुनी बहन तथा अन्य।

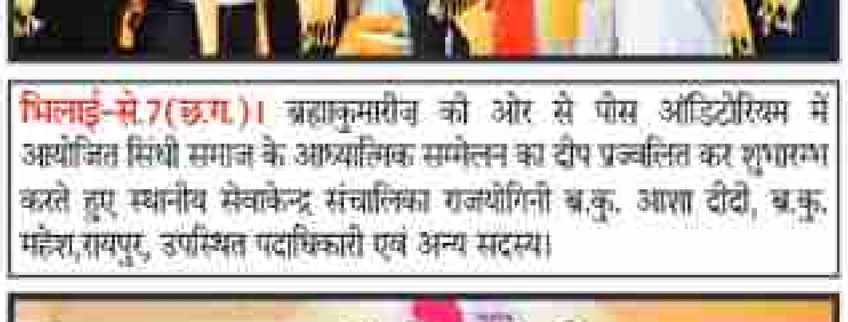

येवला-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एस.एन.डी. इंजीनियरिंग डिग्री कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीता एवं इंजीनियर्स महिलाएं।

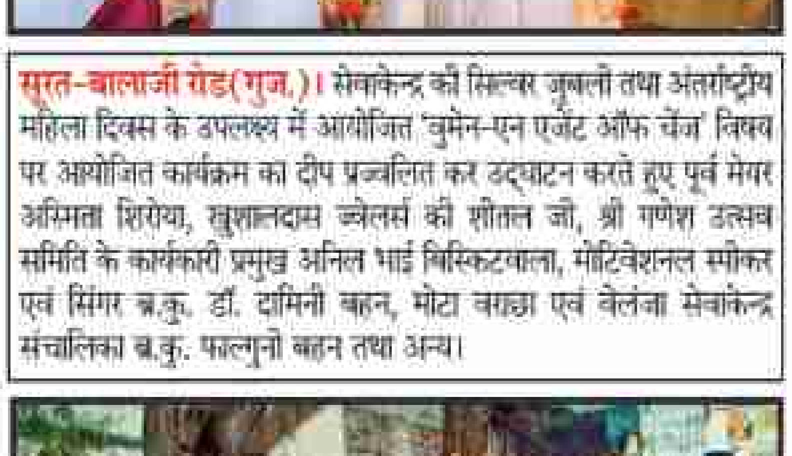

बार्शी-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित महिला स्नेह मिलन के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में शिक्षिका एवं सोशल वर्कर श्रीमती कल्पनाताई अक्कलकोटे, लोकराज न्यूज़ पत्रकार व विजिलेंस कमेटी सदस्या राजश्री गवली, म्युनिसिपल वर्कर सायरा मुल्ला, विश्वेश्वर बैंक मैनेजर स्मिता ताई जाधव, भवानी मंडल चेयरपर्सन व वारकरी संप्रदाय सदस्या सुप्रभाताई डोके, वकील सारिका शाह, हेड कांस्टेबल स्वाति डोईफोडे, पुलिस कांस्टेबल अश्विनी साबले एवं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता बहन।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में परमात्म परिचय देते हुए ब्र.कु. विनीता। मंचासीन हैं राम मंदिर जबलपुर के महंत रामकुशल पांडे, सुप्तेश्वर गणेश मंदिर समिति के अध्यक्ष रामचंद राव, पार्षद निशा राठौड़ तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया

ओमशान्ति मीडिया

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विशेषांक

शरीर और मन की वास्तविक यात्रा का विज्ञान-योग

हम सभी की ज़िंदगी कैसी है, क्या है, और किस दिशा में जा रही है - यह लगभग हर व्यक्ति जानता है। फिर भी जीवन में निरंतर उतार-चढ़ाव, अनेक घटनाएं, किस्से और अनुभव आते रहते हैं। हम उन्हें स्वीकार भी करते हैं और समय के अनुसार कर्म भी करते रहते हैं।

शरीर एक अद्भुत यंत्र है, जिसकी अपनी एक कार्यप्रणाली(मैकेनिज़्म) है। इस शरीर को संतुलित और व्यवस्थित रखने के लिए हम योगासन का सहारा लेते हैं। जब हम योगासन करते हैं, तो हमें लगता है कि हमने कुछ विशेष किया है, शरीर हल्का और स्वस्थ महसूस होता है। लेकिन कुछ समय बाद फिर वही स्थिति आ जाती है। प्रश्न उठता है - ऐसी अवस्था से बाहर कैसे निकला जाए?

प्रश्न अनेक है, लेकिन उत्तर एक है, मिलन। मार्ग अनेक है, लेकिन रोशनी एक ही है।

यदि हम अपने जीवन को ध्यान से देखें, तो पाएंगे कि जीवन का एक बड़ा हिस्सा केवल शरीर के निर्वाह में बीत जाता है। बचपन में हम स्वतंत्र होते हैं, शरीर की ओर अधिक ध्यान नहीं देते। खेलकूद और सक्रियता के कारण शरीर स्वतः स्वस्थ रहता है। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, ज़िम्मेदारियां बढ़ती हैं और हम अपने शरीर तथा मन की अनदेखी करने लगते हैं।

जब शरीर में समस्याएं आती हैं, तो हमें सलाह दी जाती है - योगासन करें, प्राणायाम करें। हम यह सब शुरू भी करते हैं, लेकिन कुछ समय बाद उसका प्रभाव कम होने लगता है। इसका कारण क्या है?

कारण यह है कि आसन करने वाला और उसे संचालित करने वाला अलग-अलग है। जैसे एक कार स्वयं नहीं चल सकती - उसे चलाने के लिए एक चालक(ड्राइवर) आवश्यक होता है। उसी प्रकार यह शरीर एक यंत्र है और उसका चालक है - आत्मा। यदि यह चालक शक्तिशाली नहीं है, तो शरीर का तंत्र ढंग से कार्य नहीं कर सकता।

इसलिए यह समझना आवश्यक है कि केवल शारीरिक योग पर्याप्त नहीं है। राजयोग हमें यह सिखाता है कि जैसे हम बाहरी उपकरणों - बिजली, पंखा, लाइट आदि का उपयोग करना सीखते हैं वैसे ही हमें अपने मन और संकल्पों को भी समझना और नियंत्रित करना चाहिए। हमारे भीतर जो विचार और संकल्प उत्पन्न होते हैं वही हमारे शरीर को संचालित करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप पार्क में योगासन कर रहे हैं और अचानक घर से कोई आपातकालीन समाचार मिल जाए, जैसे किसी को हार्ट अटैक आ गया, तो तुरंत आपकी सारी शारीरिक स्थिति बदल जाती है। आपकी ऊर्जा का प्रवाह बदल जाता है और मन पूरी तरह उस परिस्थिति में लग जाता है।

इससे स्पष्ट होता है कि शरीर को नियंत्रित करने वाली मुख्य शक्ति मन और आत्मा है। जब हम इंद्रियों को नियंत्रित कर लेते हैं तो हमारा शारीरिक तंत्र स्वतः नियंत्रित हो जाता है। तब हम जिस समय जो करना चाहें, उसे सहज रूप से कर सकते हैं। यह अवस्था अत्यंत श्रेष्ठ है।

आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में हम मशीन की तरह कार्य करते है लेकिन हमारे विचार निरंतर चलते रहते हैं। इसलिए योग गुरु भी कहते हैं कि जब आप योगासन करें, तो पूर्ण जागरूकता के साथ करें - ध्यान दें कि पैर कैसे हैं, हाथ कैसे हैं, शरीर की स्थिति कैसी है। लेकिन यह जागरूकता तभी संभव है जब मन शांत और नियंत्रित हो।

यदि मन भय, चिंता, दुःख, पीड़ा या तनाव से भरा हुआ है तो वह एक अस्वस्थ ड्राइवर की तरह है जो गाड़ी को सही दिशा में नहीं चला सकता। इसलिए सबसे पहले मन का स्वस्थ होना आवश्यक है। राजयोग मन को स्वस्थ बनाता है। यह मन की उलझनों को समाप्त करता है और भीतर शांति एवं शक्ति भरता है। जब मन संतुलित होता है, तब शारीरिक योग का वास्तविक लाभ मिलता है।

इसलिए अब समय है जागने का -

सबसे पहले स्वयं को जानने का कि मैं इस शरीर को चलाने वाली शक्ति आत्मा हूं। जब आत्मा स्वयं को पहचानती है और परमात्मा से जुड़ती है तब उसे एक दिव्य शक्ति प्राप्त होती है। उस शक्ति के साथ किया गया हर कार्य सफल होता है। दुनिया में अनेक प्रकार के योग और आसन प्रचलित हैं और सभी का अपना महत्त्व है। लेकिन राजयोग एक ऐसा योग है जो हमें परम सत्ता से जोड़ता है। यह योग हमारे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों शक्तियों को संतुलित और सशक्त बनाता है।

अंततः, जब हम आत्मबोध और मन की एकाग्रता को विकसित करते हैं तो हमारा सम्पूर्ण तंत्र स्वतः सुचारू रूप से कार्य करने लगता है। इसी अवस्था को आगे बढ़ाकर हम पूर्ण राजयोग ध्यान की ओर अग्रसर होते हैं - जहां जीवन में स्थिरता, शांति और सफलता का अनुभव होता है।

हम सभी मिलकर शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएं

हर मनुष्य चाहता है कि दूसरे पर विश्वास करें, लेकिन विश्वास वहीं टिकता है जहाँ मन शांत, विचार स्वस्थ और भावनाएं शुद्ध हों। जब हम कुछ क्षण रुककर स्वयं से संवाद करते हैं तो इस बात का अनुभव होता है कि शांति और आनंद किसी बाहरी वस्तु में नहीं बल्कि हमारे भीतर है। जब आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है तो प्रेम, भाईचारा, करुणा और एकता जीवन का हिस्सा बन जाती है। शांत और स्थिर मन समाज में शांति का बीज होता है और वहीं से विश्व शांति और विश्व एकता की नींव बनती है। सशक्त आत्मा ही विश्व एकता की संकल्पना को साकार करने की आधारशिला है। आइए शांति को अपने भीतर जगाएं, विश्वास को अपने विचारों में उतारें और एकता को अपने कर्मों में प्रकट करें। हम सब मिलकर एक बेहतर, शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

- महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, भारत।

सम्पूर्ण स्वास्थ्य का अमृत है - योग

अमृत काल का ये समय हमारे ज्ञान-योग और इनोवेशन का समय है। हमें एक ऐसा भारत बनाना है जिसकी जड़ें प्राचीन परम्पराओं और विरासत से जुड़ी होंगी। मैं जानता हूं ब्रह्माकुमारीज़ का प्रभाव पूरे विश्व में है। मैं देश के संकल्पों के साथ, देश के सपनों के साथ निरंतर जुड़े रहने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ परिवार का अभिनंदन करता हूं। अमृत और अमरत्व का रास्ता बिना ज्ञान के प्रकाशित नहीं होता है। जिसका विस्तार आधुनिकता के आधार पर अपनी संस्कृति और सभ्यता के साथ होगा। इन प्रयासों में ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं की बड़ी भूमिका है। राष्ट्र की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। विश्व योग दिवस पर आप सभी के सम्पूर्ण स्वास्थ्य की शुभकामना करता हूं।

- माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, भारत।

दुनिया की सर्व समस्या का एक समाधान और उसका आधार राजयोग और उसकी पद्धति है। उसके अन्दर जो कुछ भी है- चाहे वो शरीर से सम्बन्धित है, चाहे वो मानसिक है, चाहे आध्यात्मिक है, चाहे आर्थिक है, उन सारी स्थितियों को एक सूत्र में पिरोता है राजयोग। और ये राजयोग आज का नहीं है, प्राचीन है। जिसको ऋषि, मुनि, तपस्वी सबने सराहा है। इस आधार को आधार बनाकर हम सभी भी अपने आप को उन स्थितियों से पार ले जा सकते हैं, जो हमें हर पल, हर क्षण छेड़ती हैं, परेशान करती हैं। तो क्यों न हम इसको अपनाकर अपनी दिनचर्या में उन सारे कर्मों को एक सही दिशा दे पायें। दें, जो हमें सफलता दिलाए, जो हमें आगे बढ़ाए, हमारे से औरों को आगे बढ़ाए, हमसे सबको दुआएं मिले। ऐसी स्थिति में आकर ही हम सबको वो सब दे सकते हैं, जो हम चाहते हैं।

राजयोग का योगाभ्यास

योगाभ्यास वास्तव में वह शक्ति है जो हमारी संभावनाओं को वास्तविकता में बदल देता है। मनुष्य के भीतर परमात्मा ने सभी शक्तियां समान रूप से प्रदान की हैं। ऐसा नहीं है कि किसी को अधिक और किसी को कम मिला है - हर मानव को यह दिव्य सामर्थ्य प्राप्त है।

लेकिन अंतर यहाँ आता है कि कौन उस शक्ति का सही लालन-पालन करना जानता है, कौन उसे विकसित करने का प्रयास करता है। परमात्मा ने हर जीवन के भीतर एक सहज प्रेरणा, एक ऊंचा उठने की इच्छा शक्ति रखी है। यही इच्छा हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

योग उस वातावरण को तैयार करने का माध्यम है, जिसमें हमारी वह सुप्त शक्तियां जागृत होती हैं। जिनके पास ज्ञान और अनुभव का अभाव है, उन्हें यह संदेह हो सकता है कि क्या योग के माध्यम से इतना परिवर्तन संभव है?

लेकिन जो बीज से वृक्ष बनने की प्रक्रिया को समझता है, उसके लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जब एक छोटा-सा बीज विशाल वटवृक्ष बन सकता है, तो मनुष्य भी अपने साधारण स्वरूप से उठकर "नर से नारायण" की अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

राजयोग इसी अनंत संभावनाओं का द्वार खोलता है। राजयोग का अर्थ है- अपने भीतर उस श्रेष्ठ बीज को पहचानना, जो हमारे जीवन रूपी वृक्ष को महान बना सकता है। इसका अर्थ यह भी है कि मेरे भीतर सृजन करने की, अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार दिशा देने की पूर्ण योग्यता है।

इन अनंत संभावनाओं को पहचानने और उन्हें साकार करने के लिए हमें अपने भीतर छिपी हुई सुषुप्त शक्तियों को जागृत करना होगा। योगाभ्यास हमें यही सिखाता है अपने आप को जानना, अपनी शक्ति को पहचानना और उसे सही दिशा में प्रयोग करना।

योग द्वारा मन पर नियंत्रण - योग का सच्चा फल

योग सभी के व्यक्तित्व विकास और समाज के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मानव और प्रकृति के बीच सद्भावना स्थापित करने का माध्यम है और लोगों को स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। योग हमारे जीवन को पूरी तरह से बदलने की क्षमता रखता है - यदि हम इसे सही विधि और समझ के साथ अपनाएं।

हममें से हर व्यक्ति जीवन को पूर्ण रूप से, जी भरकर जीना चाहता है और योग उसी कला की जड़ी-बूटी है। योग का सम्पूर्ण लाभ लेने के लिए हमें इसे गहराई से समझना होगा। इसके लिए यह जानना आवश्यक है कि योगी कौन होता है।

योगी वह व्यक्ति होता है जिसमें स्वयं के लिए दूसरों के लिए और प्रकृति के लिए सद्भावना होती है। योग हमारी इंद्रियों को नियंत्रित करता है और देह भान को परिवर्तित करता है, जिससे यह अनुभूति होने लगती है कि यह शरीर केवल एक साधन है - परमशक्ति का अनुभव करने का माध्यम है।

योग में इतनी शक्ति है कि वह पूरे विश्व को एकता के सूत्र में बांध सकता है। कई लोग योग को केवल एक व्यवस्था के रूप में देखते हैं लेकिन वास्तव में योग कोई व्यवस्था नहीं, बल्कि एक अवस्था है। योग कोई संस्था नहीं, बल्कि आस्था है। जब तक हम इसे इस रूप में नहीं समझते, तब तक हम इसे टुकड़ों में ही देखते हैं और इसकी पूर्णता को पहचान नहीं पाते।

एक सच्चा योगी बनने के लिए हमें इस देह रूपी साधन से ऊपर उठकर अपने भीतर के सत्य को पहचानना होगा। परमशक्ति के साथ जुड़कर, आंतरिक शक्ति का अनुभव करते हुए हमें यह समझना होगा कि हमारी वास्तविक पहचान यह शरीर नहीं बल्कि एक शुद्ध, सच्ची आत्मा है। यह शरीर केवल एक माध्यम है, जिसके द्वारा हमें जीवन जीना है।

जब जीवन पर हमारा नियंत्रण स्थापित होता है तब हम वास्तविक अर्थों में योग को प्राप्त करते हैं और यही योग का सच्चा फल है।

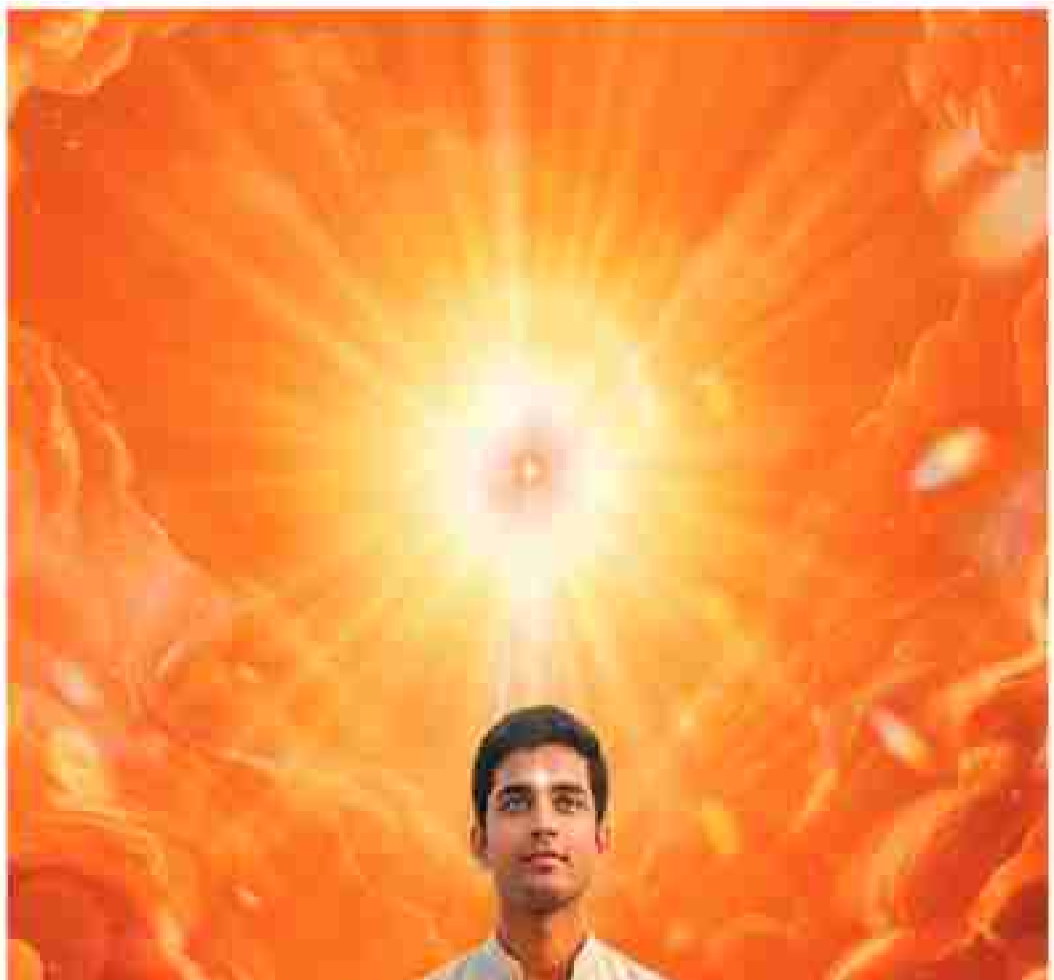

योगा और राजयोगा का संतुलन स्वस्थ जीवन का आधार

आज के समय में लोग अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हैं जैसे डायबिटीज, हाइपरटेंशन आदि। इन बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए लोग लगातार उपाय खोजते रहते हैं, लेकिन उपचार के बजाए ये बीमारियां धीरे-धीरे लाइलाज रूप लेती जा रही हैं। इसका एक प्रमुख कारण बढ़ता हुआ तनाव है, जिसे आज की युवा पीढ़ी सही तरीके से संभाल नहीं पा रही। परिणामस्वरूप वे शराब और ड्रग्स जैसे हानिकारक साधनों का सहारा लेने लगते हैं।

ऐसी स्थिति में एक ही सशक्त उपाय सामने आता है - योगाभ्यास। योग ही हमारी मानसिक स्थिति को संतुलित बनाए रखने में सक्षम है। यदि हम शरीर को मन और बुद्धि का मंदिर मानें, तो योग उस मंदिर को सुंदर, सशक्त और पवित्र बनाता है। योग तभी पूर्ण रूप से लाभकारी होता है जब उसे सही विधि और अनुशासन के साथ किया जाए। यह न केवल हमारी शारीरिक और मानसिक क्षमता को बढ़ाता है बल्कि हमारी आंतरिक विशेषताओं का विकास करता है और हमें तनावमुक्त जीवन जीने की दिशा में अग्रसर करता है।

योग को समझने के लिए 'साधन' और 'साध्य' के अंतर को जानना आवश्यक है। हमारा शरीर साधन है, जबकि मन और बुद्धि साध्य हैं। मन और बुद्धि के बीच जो द्वंद्व चलता है - मन कुछ और चाहता है और बुद्धि कुछ और निर्णय लेती है - यही असंतुलन हमारे जीवन में अनेक समस्याओं का कारण बनता है। इस असंतुलन के कारण शरीर में रासायनिक प्रक्रियाएं प्रभावित होती हैं जिससे बीपी, डायबिटीज और अन्य विकृतियां उत्पन्न होती हैं।

वास्तव में, यह असंतुलन मन और बुद्धि के बीच तालमेल के अभाव और परिस्थितियों के प्रभाव में लंबे समय तक जीने की आदत के कारण उत्पन्न होता है। हम अपनी वास्तविक पहचान से दूर हो जाते हैं और बाहरी वातावरण के प्रभाव में आकर अपने जीवन का संतुलन खो देते हैं।

इसलिए योग का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। यह हमें शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर सशक्त बनाता है। यदि हम स्वस्थ, संतुलित और सम्पूर्ण जीवन जीना चाहते हैं, तो योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना ही होगा। यही हमें वास्तविक स्वास्थ्य और आत्मिक संतुलन की ओर ले जाता है।

राजयोग भयमुक्त, संतुलित और समृद्धि जीवन कुंजी

योग के माध्यम से जब हम स्वयं को नया बनाते हैं, तभी हम विश्व को भी नया बना सकते हैं। आज का विश्व आर्थिक आधार पर विभाजित हो चुका है, जहाँ भौतिकता के कारण निरंतर संघर्ष चलता रहता है। लेकिन सबसे बड़ी विफलता यह है कि हम एक-दूसरे की भावनाओं को समझने में असमर्थ रहे हैं। और यह तब तक संभव भी नहीं है जब तक हम स्वयं को नहीं समझते।

स्वामी विवेकानंद ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक राजयोग में कहा है कि प्रत्येक आत्मा का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है और उसमें यह सामर्थ्य है कि वह प्रकृति को नियंत्रित कर अपनी आंतरिक और बाह्य शक्तियों को प्रकट कर सके। उन्होंने यह भी संदेश दिया कि अपने कर्म और साधना के माध्यम से इसे अनुभव करो, लेकिन अपनी विचारधारा को दूसरों पर थोपने का प्रयास मत करो। स्वयं स्वतंत्र रहो और दूसरों को भी स्वतंत्र रहने दो - यही सच्चा धर्म और जीवन का कर्त्तव्य है।

योग किसी व्यापार या प्रदर्शन की वस्तु नहीं है, बल्कि यह एक मानसिक अवस्था है। जब हम योग को केवल बड़ी-बड़ी और जटिल बातों के रूप में देखते हैं तो हमें यह कठिन लगने लगता है और हमारा विश्वास डगमगाने लगता है। लेकिन यदि हम इसे छोटे-छोटे सरल कदमों में समझें तो महसूस होता है कि यह तो हम भी कर सकते हैं, यह मार्ग हमारे लिए भी संभव है।

योग न तो कोई व्यवस्था है और न ही किसी की निजी सम्पत्ति है। यह एक अवस्था है, जो सम्पूर्ण मानव जाति की धरोहर है। यह केवल इस युग के लिए नहीं, बल्कि अनेक युगों के लिए मानव जीवन को श्रेष्ठ और सम्पूर्ण बनाने का साधन है। योग के माध्यम से हम शारीरिक और मानसिक स्तर पर सशक्त बनते हैं और जीवन के वास्तविक आनंद का अनुभव करते हैं।

योग का वास्तविक परिणाम यह है कि हमारी सोच और हमारे कर्मों में शुद्धता आने लगती है। जब योग हमारे जीवन में गहराई से उतरता है, तो कर्मों से लालच, हिंसा और नकारात्मक भावनाएं स्वतः समाप्त होने लगती हैं। इसके साथ ही हमें न केवल उत्तम स्वास्थ्य का लाभ मिलता है, बल्कि सामाजिक सहयोग और सामंजस्य की भी प्राप्ति होती है। एक स्वस्थ शरीर और अनुशासित बुद्धि ही भयमुक्त विश्व की मजबूत नींव है।

योग दिवस पर विशेष : राजयोग से आंतरिक शांति की ओर

राजयोग - मन पर स्वराज्य का सहज मार्ग

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि स्वस्थ और संतुलित जीवन के लिए योग अत्यंत आवश्यक है। परंतु योग का वास्तविक अर्थ केवल शारीरिक व्यायाम तक सीमित नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग हमें आत्मचेतना, मन की स्थिरता और परमात्मा से जुड़ाव का अनुभव कराता है। आज के तनावपूर्ण और व्यस्त जीवन में राजयोग एक ऐसी विधि है जो हमें भीतर से सशक्त बनाकर सच्ची शांति और संतुलन प्रदान करती है।

आज जब पूरा विश्व योग दिवस मना रहा है, तब यह समझना आवश्यक है कि योग केवल शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाली एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग हमें बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन की ओर ले जाता है।

राजयोग का अर्थ : मन और इंद्रियों पर स्वयं का स्वराज्य स्थापित करना। आज मनुष्य बाहरी उपलब्धियों में तो आगे बढ़ रहा है लेकिन भीतर से अस्थिर और तनावग्रस्त होता जा रहा है। इसका मुख्य कारण है : मन पर नियंत्रण का अभाव। राजयोग हमें सिखाता है कि हम अपने विचारों के स्वामी बनें, न कि उनके दास। जब हम राजयोग ध्यान का अभ्यास करते हैं तो हम स्वयं को आत्मा रूप में अनुभव करते हैं - शांत, पवित्र और शक्तिशाली। यह अनुभव हमें परमात्मा से जोड़ता है जो शांति और शक्ति का असीम स्रोत है। इस जुड़ाव से मन में सकारात्मकता, स्थिरता और स्पष्टता आती है।

आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में, जहाँ हर पल सूचनाओं का दबाव है, वहाँ मन को शांत और केंद्रित रखना एक चुनौती बन गया है। ऐसे समय में राजयोग एक सरल और प्रभावी उपाय प्रदान करता है। यह हमें सिखाता है कि कैसे अनावश्यक विचारों को रोककर, अपने मन को सकारात्मक दिशा दी जाए।

योग दिवस केवल एक दिन का उत्सव न बनकर, यदि हम इसे अपने जीवन का हिस्सा बना लें, तो वास्तविक परिवर्तन संभव है। प्रतिदिन कुछ समय राजयोग के लिए निकालना, हमारे मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अंततः, राजयोग हमें यह संदेश देता है कि सच्चा सुख और शांति बाहर नहीं बल्कि हमारे भीतर ही विद्यमान है। आवश्यकता है उसे पहचानने और अनुभव करने की। यही योग का वास्तविक उद्देश्य है - स्वयं से जुड़कर, परमात्मा से जुड़ना और जीवन को श्रेष्ठ बनाना।

राजयोग परमात्मा से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध का नाम है

आप देखो भक्ति से लेकर अभी तक की जो सब मनुष्य की स्थिति है या मानव का परमात्मा के प्रति भाव है, उसकी अलग-अलग सीमाएं तय की गईं। जैसे भक्ति में कहा जाता है कि भगवान भाव का भूखा होता है, न कि भोजन का भूखा है, फल-फूल या जल का भूखा है। वो केवल भाव का भूखा कहा जाता है। लेकिन इस बात को समझने वाले कितने हैं? बहुत थोड़े। लेकिन जो समझते हैं और उसको अपने जीवन में अपनाते हैं उनकी भी संख्या बहुत ज़्यादा नहीं है। परमात्मा को समझने का आधार क्या हो सकता है? जैसे आप देखो इस दुनिया में जो स्थूल चीज़ें हैं - घर, गाड़ी, मकान, पैसा, इसमें हम सबके अपने संकल्प भी हैं, हमारा खुद का भाव भी है। और जो भी हमारे संकल्पों में होती है, सोच में होती है वो थोड़े दिन में हमारे पास अपने आप ही रेवेल होके आ जाती है, प्रत्यक्ष हो जाती है। लेकिन जब भी हम परमात्मा से जुड़ते हैं, दुनिया में भी कहते हैं कि कोई न कोई दुःख, तकलीफ, दर्द जब होता है तब जुड़ते हैं। मनुष्य की एक स्थिति है, जब उसका सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो कुछ भी नहीं सुनना चाहता, और जब सब कुछ खराब हो जाता है तो उस समय उसके पास ताकत नहीं होती कि वो कुछ भी सुन सके गहरी बात, ज्ञान की बात। तो सुनेगा कब, जब सब ठीक हो।

तो ज़्यादातर जब दुःख और तकलीफ की स्थिति होती है उस समय लोग परमात्मा के पास जाते तो हैं और मिलते भी हैं, जुड़ते हैं लेकिन प्राप्ति के लिए, प्रेम के लिए नहीं। तो जहाँ पर प्राप्ति है, प्राप्ति का भाव है, प्राप्ति करने की स्थिति है वहाँ प्रेम हो ही नहीं सकता। तो परमात्मा कहते हैं कि ये सारी चीज़ें तो आपको आपके संकल्पों से ही मिल जाएंगी। आप मेरे पास केवल प्रेमपूर्ण बात करने के लिए बैठो। मेरे से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बनाओ। दुनिया में व्यक्ति धनी तब माना जाता है जब दुनिया में उसके सारे सम्बन्ध बहुत अच्छे हों। कहते हैं जब कोई व्यक्ति बीमार है और उसके सारे सम्बन्धी उसको सपोर्ट करते हैं तो उसको बीमारी में भी सुख मिलता है। ऐसे ही परमात्मा कहते हैं कि तुम मेरे से प्रेमपूर्ण रूप से जुड़ते हो, केवल मेरे से महसूस करते हो, बिना कुछ मांगे, बिना कुछ इधर-उधर की बातें किए, बिना कुछ दुःख सुनाए, हम कभी भी परमात्मा के साथ बैठकर बात कर सकते हैं।

आप देखेंगे कि आज भी जब हम परमात्मा के साथ योग लगाने बैठते हैं तो बहुत सारी बातें दुःख की, तकलीफ की, दर्द की स्थिति बयां करते हैं, हम सारा टाइम उन बातों में निकाल देते हैं, तो फिर भगवान से हमने क्या बातचीत की? तो परमात्मा ने राजयोग की स्थिति इसी को बताई कि जब आत्मा यहाँ के सारे देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थों की बातें भूलकर मेरे से मैं जो हूँ, जैसा हूँ उस रूप से मिलती है। केवल एक भाव से, केवल एक एहसास से उसको कोई नाम नहीं देती है, केवल मिलती है, केवल प्रेम करती है। उससे जो प्राप्ति होती है वो सुकून वाली होती है, शांति वाली होती है। और उससे जो अपनापन मिलता है उससे लगता है कि हम भी इस दुनिया में हैं तो ज़रूर, लेकिन एक केवल भूमिका निभाने के लिए। तो इस प्रेमपूर्ण सम्बन्ध की गहराई समझने के लिए सबसे पहले जो भी इसको जानना चाहता है, करना चाहता है, पूछना चाहता है, बताना चाहता है, वो इसको करे। इसको इस भाव से भी देखा जाता है कि जब इसको हम करना शुरू करेंगे तो एक दिन में कोई चीज़ हमको नहीं मिल जाएगी, एक दिन में कोई प्राप्ति नहीं हो जाएगी। लेकिन वो प्राप्ति जो इस समय होगी वो भाव वाली होगी, उस प्राप्ति में सुख बहुत होगा।

कहने का मतलब है - परमात्मा से प्रेम का अर्थ ये है कि हम सभी जिन गुणों और जिन शक्तियों से बने होते हैं ना, हम उसी की पूरी जीवन तलाश करते हैं। हम बने हैं ज्ञान से, पवित्रता से, शांति से, सुख से, प्रेम से, आनंद से और इन्हीं चीज़ों की तलाश हम स्थूल चीज़ों में कर रहे हैं और इन्हीं की प्राप्ति के लिए हम भगवान से भी जुड़ रहे हैं। तो ये तो न्याय नहीं हुआ ना! इसीलिए परमात्मा कहते हैं तुम मनुष्यों को अतीन्द्रिय सुख या फिर भगवान के साथ परम सुख प्राप्त करना है तो उसके लिए कोई प्राप्ति की बात नहीं करो, केवल जुड़ो, केवल अनुभव करो और आपको अपने संकल्पों से वैसे ही सबकुछ मिल जाना है। इस आधार से जो सम्बन्ध बनेगा उससे हमारी हेल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस नैचुरल होगी, और हमारे को कोई भी कमी महसूस नहीं होगी। तो परमात्मा से इस सम्बन्ध को बढ़ाएं और अपने आपको जोड़ कर दिखाएं, इसी को राजयोग कहेंगे।

कुछ इनके भी नज़रिये परमात्मा के बारे में...

परमात्मा से प्रेमपूर्ण सम्बन्ध है योग

हम एक परमात्मा, एक विश्व परिवार की संकल्पना से चलते हैं। इस संकल्पना को साकार रूप देने का माध्यम परमात्मा द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग ही है। इसी से ही हम उस अवस्था को पुनः प्राप्त कर पायेंगे। भारत देश पुनः देवभूमि बनेगा जहाँ सुख, शान्ति व सम्पत्ति के अखुट भंडार होंगे, जब सब इसी संकल्पना को लेकर चलेंगे। ऐसा मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि जो कुछ भी आज मैंने पाया है वो परमात्मा द्वारा सिखाए गये राजयोग के आधार से ही है। हमारा संकल्प है कि पूरा विश्व इस राजयोग के सूत्र में बंधे ताकि हम एक स्वर्णिम दुनिया की संकल्पना को साकार कर सकें।

- राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

अपने मन को जीतना ही सफलता का प्रथम सूत्र है

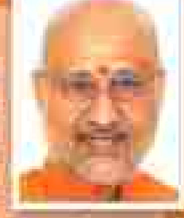

राजयोग, विपस्सना और तपस्या जैसी समृद्ध आध्यात्मिक परंपराएं आज भारत को विश्व गुरु बना रही हैं। यही आध्यात्मिक शक्ति राष्ट्र का मार्गदर्शन कर रही है। ध्यान, आत्मा, मन और शरीर को गहन शांति प्रदान करता है। ध्यान की अवस्था में सकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं और आंतरिक ऊर्जा का संचार होता है। मन को जीतना ही सफलता का प्रथम सूत्र है, यही गीता का संदेश है।

- सीपी राधाकृष्णन,उपराष्ट्रपति

बाबा का ज्ञान आज भी हमें नई ऊर्जा दे रहा है

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था विश्व की सबसे बड़ी बहनों द्वारा संचालित आध्यात्मिक संस्था है, जो भारत की प्राचीन अध्यात्म एवं योग परंपरा को पूरे विश्व में प्रसारित कर रही है। यह संस्था शारीरिक रोगों की तुलना में मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य पर अधिक प्रभावी रूप से कार्य करती है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाया जाने वाला सहज राजयोग चिंता, अशांति, तनाव एवं अवसाद जैसी नकारात्मक मानसिक स्थितियों को समाप्त कर मानव जीवन को श्रद्धा, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक ऊर्जा से भर देता है।

- ओम बिरला,अध्यक्ष,लोकसभा

राजयोग ने जगाई है विश्व में नई चेतना

सेना और सीआरपीएफ छोड़कर सभी राज्यों की पुलिस भी कानून और व्यवस्था की स्थिति संभालकर संरक्षण देने का काम करती है। परंतु यह काम एक प्रकार से ढेर सारा तनाव पैदा करने वाला है। नींद की कमी, पानी की कमी, शांत मन की कमी और हिंसा से जूझने के समय उनका मन तनाव में होता है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हमारे सुरक्षा कर्मियों को बाहर लाकर उनका मन, आत्मा और शरीर को शांति का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास करना, अपने आप में एक बहुत बड़ा काम है। मैं इसके लिए ब्रह्माकुमारी को बहुत-बहुत साधुवाद देना चाहता हूँ।

- अमित शाह,गृह मंत्री, भारत सरकार

ब्रह्माकुमारीज़ ने निःस्वार्थ भाव से मानवता के लिए कार्य किया

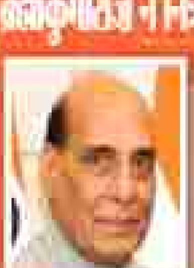

ब्रह्माकुमारीज़ ने राजयोग साधना के माध्यम से ऊर्जा की तरंगों को फैलाया है। यह मैं सहज अनुभव कर सकता हूँ। यहाँ अद्भुत वायब्रेशन हैं। यहाँ कहीं मंदिर नहीं है, गिरिजाघर, मस्जिद नहीं है। लेकिन फिर भी गज़ब के वायब्रेशन हैं। यहाँ आध्यात्मिक तरंगें तैर रही हैं। यहाँ आकर हर कोई अहंकार शून्य हो जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ ने निःस्वार्थ भाव से पूरी मानवता के आध्यात्मिक विकास और आत्मिक बल बढ़ाने के लिए कार्य किया है।

- राजनाथ सिंह,रक्षा मंत्री,भारत सरकार

कुछ इनके भी नजरिये परमात्मा के बारे में...

ब्रह्माकुमारीज विराट प्रयास है

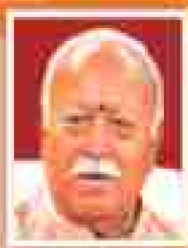

ब्रह्माकुमारीज़ शील और चरित्र जगाते हैं। और चरित्र जगाने का आधार है - शरीर-मन-बुद्धि के परे जाकर अपने अंतर की यात्रा करना। संघ भी कहता है कि बनना है तो अंदर से बनो। चरित्र के अंदर शील होता है। हम आपस में परस्पर सहयोगी होकर चलें, परस्पर बाधक न बनें। मैं बहुत जल्द माउंट आबू आऊंगा। ब्रह्माकुमारीज विराट प्रयास है। ब्रह्माकुमारीज में भाई-बहनों का रिश्ता है तो सारी समस्याएं यहीं खत्म हो जाती हैं। जैसे ब्रह्माकुमारीज़ सेवाओं के विस्तार के लिए किसी से कोई खर्चा नहीं मांगते हैं, वैसे ही संघ भी कार्य करता है। संघ को सभी मिलकर चलाते हैं।

- डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, आरएसएस

एक मात्र संस्थान कर रहा मनुष्य से देवता बनाने का महान कार्य

मन एक साधन है जो हमारे बंधन या स्वतंत्रता का कारण हो सकता है, ये तो इसके उपयोग पर निर्भर करता है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने आम आदमी को आसान तरीके से राजयोग सिखाया है। ये मनुष्य को देवता बनाने का कठिन कार्य कर रही हैं। मूल्य किसी भी राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति है। आज पूरे विश्व में योग के भारतीय विज्ञान की मांग है। ब्रह्माकुमारीज जैसे संगठनों ने राजयोग को जन-जन तक ले जाने के लिए बहुत महान कार्य किया है। प्रत्येक भारतीय को इस कार्य पर गर्व महसूस करना चाहिए। भारत में ऐसे संस्थान का होना बहुत ही गर्व की बात है।

-माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र.

ऐसा परमात्म उपस्थिति के बिना संभव नहीं

यहाँ मैंने देखा और अनुभव किया कि ऐसा एकमुखी संकल्प केवल ईश्वर के विराजने से ही होता है। मैं विश्व हिंदू परिषद में काम करता हूं। हम भी सब लोगों को कहते हैं कि भाई हिंदू हो ना? क्या इसलिए हिंदू हो कि माता-पिता हिंदू थे? हर एक का जवाब अलग-अलग होगा। पर यहाँ पर मैं जब देखता हूं तो ऐसा लगता है कि इस युग की क्रांतियों में से यह एक बड़ी क्रांति है। विश्व हिंदू परिषद की ओर से मैं आप सबका अभिनंदन करता हूं। जिनका सौभाग्य है उनको ही परमात्मा यहाँ लेकर आया है। हम सबके लिए एक धन्यता का भी अनुभव करता हूं कि हम सब सतयुग लाने के लिए पुरुषार्थी हो रहे हैं। भगवान निमित्त बनाए इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है। मैं पहली बार आया हूं।

- आलोक कुमार, अध्यक्ष, विश्व हिंदू परिषद

राजयोग से बदलती है तकदीर

'हर पत्थर की तकदीर बदल सकती है, शर्त है कि उसे सलीके से संवारा जाये'। हमारी दादी जानकी ने देश को एक आत्म-ऊर्जा का मंत्र दिया। जब परमात्मा किसी के जीवन के साथ जुड़ता है तो सदा बहार आती है। राजयोग से परमात्मा ने सबके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। यहाँ मानव तथा प्रकृति के बीच में सामंजस्य का एहसास है।

- स्वामी चिदानंद जी

राजयोग निःस्वार्थ भावना को करता प्रखर

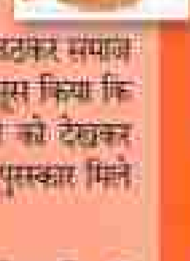

नारी-शक्ति द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य आबू में संचालित हो रहा है, यह विश्व के अंदर कहीं भी नहीं है। इस परिवार का महामंत्र है तेरा सो तेरा, मेरा भी तेरा। ये बहनें राजयोग द्वारा स्वार्थ से उठकर समाज निर्माण का कार्य कर रही हैं। हमने महसूस किया कि दादी जानकी की प्रखरता एवं कुशलता को देखकर उन्हें भारत रत्न तो क्या, बल्कि नोबेल पुरस्कार मिले जिसकी वे हकदार हैं।

-डॉ. लोकेश मुनि।

भीतर की शक्ति से बाह्य सफलता दिलाता : राजयोग

जब ध्यान भीतर की ओर मुड़ता है, तब जीवन की दिशा बदलने लगती है।

राजयोग मेडिटेशन हमें उसी आंतरिक शक्ति से जोड़ता है, जो व्यक्तित्व को शांत, स्पष्ट और प्रभावशाली बनाती है।

राजयोग मेडिटेशन का नियमित अभ्यास हमारे भीतर गहरा और सकारात्मक परिवर्तन लाता है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया गया यह सहज ध्यान हमें आत्मचेतना की ओर ले जाता है, जहाँ हम स्वयं को केवल शरीर नहीं, बल्कि शांति और शक्ति से भरपूर आत्मा के रूप में अनुभव करते हैं। इस अनुभव से मन की चंचलता धीरे-धीरे शांत होती है और विचारों में स्पष्टता आती है।

राजयोग के अभ्यास से हमारे भीतर आत्मविश्वास, धैर्य और सहनशक्ति विकसित होती है। नकारात्मक भावनाएँ जैसे क्रोध, भय और तनाव कम होने लगते हैं, और उनके स्थान पर सकारात्मकता, प्रेम और संतुलन स्थापित होता है। इससे हमारे निर्णय अधिक सटीक और प्रभावशाली बनते हैं।

धीरे-धीरे हम परिस्थितियों के प्रभाव में आने के बजाए उन्हें संभालने वाले बन जाते हैं। यही आंतरिक सशक्तता हमें 'उज्ज्वल' बनाती है-एक ऐसा व्यक्तित्व, जो स्वयं भी शांत और संतुष्ट रहता है तथा दूसरों के जीवन में भी प्रकाश और प्रेरणा का स्रोत बनता है।

जीवन में साहस, संतुलन और सम्मान से भर देता राजयोग

जब मन स्वयं से जुड़ता है, तब भीतर छिपी शक्तियाँ प्रकट होने लगती हैं। राजयोग मेडिटेशन हमें उसी आंतरिक ऊर्जा से जोड़कर जीवन को साहस, संतुलन और सम्मान से भर देता है।

राजयोग मेडिटेशन हमारे भीतर छिपी आंतरिक शक्तियों को जागृत करने की एक सरल और प्रभावशाली विधि है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा सिखाया गया यह अभ्यास हमें आत्म-चेतना में स्थिर करता है, जिससे आत्मविश्वास स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगता है। जब व्यक्ति स्वयं को एक शक्तिशाली आत्मा के रूप में अनुभव करता है, तो जीवन की चुनौतियाँ उसे कमजोर नहीं करतीं, बल्कि और अधिक दृढ़ बनाती हैं।

राजयोग के नियमित अभ्यास से साहस विकसित होता है, जिससे हम कठिन परिस्थितियों का सामना निडरता से कर पाते हैं। सहनशीलता बढ़ने से हम दूसरों की बातों और परिस्थितियों को शांत मन से स्वीकार करना सीखते हैं। साथ ही, करुणा और संवेदनशीलता के गुण प्रकट होते हैं, जिससे हमारे संबंध मधुर और सहयोगपूर्ण बनते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण है आत्मसम्मान का विकास–जब हम अपनी वास्तविक पहचान को समझते हैं, तो भीतर से संतुष्टि और गरिमा का अनुभव होता है। इस प्रकार राजयोग हमें अंदर से सशक्त बनाकर जीवन को सफल और सार्थक बनाता है।

मन को चार्ज और व्यवहार को सुमधुर बनाता राजयोग

राजयोग मेडिटेशन केवल ध्यान की प्रक्रिया नहीं बल्कि मन को रोज़ाना 'चार्ज' करने की एक आध्यात्मिक तकनीक है। जैसे हम शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करते हैं, वैसे ही मन को भी सकारात्मक विचारों से सशक्त बनाना आवश्यक है।

योग करने का सही तरीका है - सुबह के शांत समय में कुछ मिनट स्वयं के साथ बैठना, अपने आप को आत्मा रूप में अनुभव करना और सकारात्मक संकल्प देना - "मैं शांत हूं, मैं शक्तिशाली हूं, मैं पवित्र हूं।" इन संकल्पों को केवल बोलना नहीं, बल्कि महसूस करना और मन में चित्रित करना ही सच्चा योग है। योग की महत्ता इस बात में है कि यह हमारे विचारों को शुद्ध करता है। जब विचार बदलते हैं, तो व्यवहार अपने आप बदल जाता है। क्रोध, तनाव और नकारात्मकता कम होती है, और उनकी जगह धैर्य, प्रेम और सहनशीलता विकसित होती है। इससे हमारे संबंध मधुर और सशक्त बनते हैं।

शरीर की एक्सरसाइज़ हमें शारीरिक रूप से फिट बनाती है, लेकिन राजयोग मानसिक और भावनात्मक शक्ति देता है। दोनों का संतुलन जीवन को सम्पूर्ण बनाता है। जब हम रोज़ सकारात्मक संकल्पों के साथ अपने मन को ताज़ा करते हैं, तो हम न केवल स्वयं शांत और खुश रहते हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय

मुंबई-नेपियन सी रोड(महा.)। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर पुष्प गुच्छ भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रुक्मिणि बहन।

पणजी-गोवा। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर इरवले में आयोजित 7 दिवसीय शिव दर्शन प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए गोवा के गवर्नर पुसपति अशोक गजपति राजू। साथ हैं केन्द्रीय मंत्री श्रीपाद नाईक, गोवा व सिंधुदुर्ग सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शोभा दीदी, ब्र.कु. सचिन परब तथा अन्य।

कथा सरिता

सच्चाई की जीत

एक समय की बात है, एक धर्मात्मा राजा ने अपने राज्य में एक अनोखी चुनौति रखी। उन्होंने घोषणा की कि जो कोई भी सच्चाई के साथ पूरा जीवन जीता होगा, उसे अपार धन और सम्मान से नवाजा जाएगा। इस घोषणा से पूरे राज्य में हलचल मच गई। हर कोई इस इनाम को पाने के लिए उत्सुक था। उसी राज्य में एक गरीब लेकिन ईमानदार किसान रहता था। उसने अपने जीवन के हर कदम पर सच्चाई को अपनाया था। चाहे वह उसके खेती का काम हो या उसके पड़ोसियों के साथ उसका व्यवहार, वह हमेशा सच्चाई के मार्ग पर चलता रहा।

एक दिन, किसान ने सोचा कि वह भी राजा की चुनौति का हिस्सा बनेगा। वह राजा के दरबार में गया और अपनी सादगी और ईमानदारी की कहानियां सुनाई। उसने बताया कैसे उसने अपने खेत में सोने की मुद्राएं पाई थीं, परंतु उसने उन्हें उसके असली मालिक को लौटा दिया। कैसे उसने अपने पड़ोसी की भूलवश भेजी गई अनाज की बोरी उसे वापस कर दी थी।

राजा उसकी कहानियों से प्रभावित हुए। उन्होंने महसूस किया कि किसान ने न केवल शब्दों में, बल्कि कर्मों में भी सच्चाई को अपनाया था। राजा ने उसे इनाम के रूप में सोने के सिक्के, नई भूमि और राज्य में सम्मानित स्थान दिया और आश्वासन दिया कि उसकी सच्चाई और ईमानदारी का राज्य भर में गुणगान किया जाएगा। इस घटना से प्रेरित होकर, अन्य लोगों ने भी सच्चाई के मार्ग को अपनाने का संकल्प लिया।

यह घटना पूरे राज्य में सच्चाई और ईमानदारी के महत्व को उजागर करने वाली बन गई। लोगों ने समझा कि भले ही सच्चाई का मार्ग कठिन हो, परंतु उसके परिणाम हमेशा शुभ और संतोषजनक होते हैं।

शिक्षा : सच्चाई हमेशा जीतती है। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्चाई का मार्ग चुनना हमेशा फलदायी होता है और अंत में, यही जीत की कुंजी होती है।

परमात्म ऊर्जा

बेहद की सेवा से दुआयें लेना और देना

बेहद की सेवा में समय लगाने से समस्या सहज ही भाग जायेगी क्योंकि चाहे अज्ञानी आत्माएं हैं, चाहे ब्राह्मण आत्माएं हैं लेकिन अगर समस्या में समय लगाते हैं व दूसरों का समय लेते हैं तो सिद्ध है कि वह कमज़ोर आत्माएं हैं, अपनी शक्ति नहीं है। जिसको शक्ति नहीं हो, पांव लंगड़ा हो और उसको आप कहो दौड़ लगाओ, तो लगायेगा या गिरेगा? तो समस्या के वश आत्माएं चाहे ब्राह्मण भी हैं लेकिन कमज़ोर हैं, शक्ति नहीं है, तो वह कहाँ से शक्ति लायें? बाप से डायरेक्ट शक्ति ले नहीं सकता क्योंकि कमज़ोर आत्मा है। तो क्या करेंगे? कमज़ोर आत्मा को दूसरे कोई का ब्लड देकर ताकत में लाते हैं, कोई शक्तिशाली इन्जेक्शन देकर ताकत में लाते हैं तो आप सबमें शक्तियां हैं। तो शक्ति का सहयोग दो, गुण का सहयोग दो। उन्हों में है ही नहीं, अपना दो। पहले भी कहा ना - दाता बनो। वह असमर्थ हैं, उन्हों को समर्थी दो। गुण और शक्ति का सहयोग देने से आपको दुआयें मिलेंगी और दुआयें लिफ्ट से भी तेज रॉकेट हैं। आपको पुरुषार्थ में समय भी देना नहीं पड़ेगा, दुआओं के रॉकेट से उड़ते जायेंगे। पुरुषार्थ की मेहनत के बजाए संगम के प्रालब्ध का अनुभव करेंगे। दुआयें लेना - वह सीखो और सिखाओ। अपना नेचुरल अटेन्शन और दुआयें, अटेन्शन भी टेन्शन मिक्स नहीं होना चाहिए, नेचुरल हो। नॉलेज का दर्पण सदा सामने है ही। उसमें स्वतः सहज अपना चित्र दिखाई देता ही रहेगा। इसीलिए कहा कि पर्सनैलिटी की निशानी है प्रसन्नचित्त।

यह क्यों, क्या, कैसे। यह के के की भाषा समाप्त। दुआयें लेना और देना सीखो। प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना - यह है दुआयें देना और दुआयें लेना। कैसा भी हो आपकी दिल से हर आत्मा के प्रति हर समय दुआयें निकलती रहें - इसका भी कल्याण हो। इसकी भी बुद्धि शांत हो। यह ऐसा, यह वैसा - ऐसा नहीं। सब अच्छा।

शहेरा-गुज.। नवनिर्मित भवन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोग प्रशिक्षिका,मैनेजमेंट ट्रेनर राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी,माउंट आबू, वडोदरा अलकापुरी उपक्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. निरंजना दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. अमर दीदी,सुख-शांति भवन,अहमदाबाद, मुकेश देसाई,पूर्व प्रमुख नगर सेवासदन, प्रदीप सोनी,प्रमुख पत्रकार एकता परिषद पंचमहल जिला, केतकी सोनी,अध्यक्षा लायंस क्लब,गोधरा, डॉ. अजय भावसार,भावसार हॉसिपटल, राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेखा दीदी,पंचमहल दाहोद महिसागर जिला, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रतन बहन तथा अन्य।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। प्रख्यात ईएनटी विशेषज्ञ वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. राजेंद्र जोशी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजू। साथ हैं ब्र.कु. ईश्वरी तथा अन्य।

जबलपुर-धन्वंतरि नगर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ज्ञान संजीवनी भवन में "वंदे मातरम् स्वर्णिम भारत" के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में उपस्थित रहे सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. श्वेता, प्रोफेसर व कैंसर रोग विशेषज्ञ श्याम रावत, समाज सेविका उषा पटेल, गौ रक्षा समिति अध्यक्ष, प्राचार्य गुरुकुल विद्यालय एंजेला चतुर्वेदी तथा अन्य।

केशोद-गुज.। 'आपणु स्वास्थ्य, अपना हाथ मां' सेमिनार का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए हृदय रोग विशेषज्ञ ब्र.कु. डॉ. सतीश गुप्ता, डॉ. राहुल गुप्ता, नगरपालिका प्रमुख मेहुल गोंडलिया, डॉ. अजुडिया, डॉ. सांगाणी, डॉ. छाया, एडवोकेट डी.डी. देवाणी, ब्र.कु. रूपा बहन तथा अन्य।

पन्ना-म.प्र.। रक्तदान शिविर में रक्तदाता स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित करते हुए स्वास्थ्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजेश तिवारी एवं ब्लड बैंक अधिकारी डॉ. प्रवीण द्विवेदी।

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

Note:- AfterTransferring, please share the screenshot on these number.

(कृपया ट्रांसफर करने के बाद नीचे दिए गए नंबर पर स्क्रीन शॉट भेजें)

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414172087

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,

पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹-720

Website: www.omshantimedia.org

अष्टांग योग बनाम राजयोग

हम सभी महर्षि पतंजलि के योगासन, योगा पद्धति को सुनते आये हैं। जिसमें उन्होंने यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि इन आठ तरह के प्रकारों की बात की। और ये आठों तरीके जो दुनिया में अपनाए गए, उसमें से सभी ने उन दो चीज़ों को पकड़ा जो उनके कम्फर्ट में थी - एक था योगासन, दूसरा था प्राणायाम। बाकी जो 6 चीज़ें थी उनको छोड़ दिया। अब अगर कोई व्यक्ति पूरी तरह से सारी चीज़ें फॉलो करे तब तो प्राप्ति हो ना!

तो यम का मतलब ये होता है, दुनिया में यम के लिए कहा जाता है कि अमृतवेले में, या सुबह-सुबह अपने आप को उठाना और नियम प्रमाण सारे कर्म करना। फिर उसके बाद आसन करना, फिर प्राणायाम करना, फिर प्रत्याहार माना इन्द्रियों पर संयम रखना, तो ध्यान लगेगा, तो धारणा होगी फिर हम समाधि वाली स्थिति में आयेंगे। ये है क्रम वार तरीका, अपने आपको उस योग पद्धति में ढालने का, जो महर्षि पतंजलि ने बताया। अब आज की दिनचर्या में ये दोनों चीज़ें नदारद हैं। न कोई सुबह जल्दी उठता है और ना ही कोई नियम प्रमाण सारे कर्म करता है। प्रत्याहार की तो बात ही भूल जायें, क्योंकि इन्द्रियों पर संयम तो ऐसे लगता है कि जैसे कोई पहाड़ तोड़ने जैसा है। और ध्यान, धारणा और समाधि ये हमारे लिए नदारद है। तो जब ये सारी चीज़ें नहीं होंगी तो हमारे को लाभ पूरी तरह से योग का कैसे होगा!

इसीलिए कोई भी गुरु ने जो कुछ सिखाया हमें वो कभी गलत नहीं सिखाया। लेकिन उसका तरीका अपनाने का हमारा गलत रहा। इसी बात को ब्रह्माकुमारीज़ जब बताती है तो किसी से किसी को अलग करके नहीं बताती, उस बात को सही तरीका देने की, सही भाव देने की कोशिश करती है। कहती है कि सबसे पहले आप ब्रह्ममुहूर्त में उठो, उसके बाद परमात्मा को याद करने की कोशिश करें नियम प्रमाण, जो भी नियम बताए जाते हैं। फिर थोड़ा-सा अपने आपको स्ट्रेच करो, आसन करो, प्राणायाम करो ताकि शरीर स्वस्थ रहे। फिर प्रत्याहार करो, जिसमें भोजन से लेकर संयम की बात की जाती है, फिर ध्यान लगेगा, परमात्मा को याद करने में आसानी होगी। फिर हमारे अन्दर जितने गुण, शक्तियां हैं उनकी धारणा होगी। फिर हम अच्छे बन जायेंगे।

आप देखो, 'राजयोग बनाम अष्टांग योग' ये क्या है? ये एक-दूसरे के पूरक ही तो हैं। लेकिन अन्तर केवल ये है कि इसमें सबसे पहले मन को जीतना सिखाते हैं, मन पर नियंत्रण सिखाते हैं, मन को दिशा देते हैं कि कैसे करना है, कैसे नहीं करना है। मन में वो सारी चीज़ें डालते हैं जो हमारे लिए रुकावट हैं, जो मनुष्य करने में असक्षम है। देखो, हमारे पास समय बहुत है, लेकिन जब हम उठेंगे ही आठ बजे तो हमारे लिए सारी चीज़ें बेकार हो जाती हैं, व्यर्थ हो जाती हैं। इसलिए परमात्मा ने टाइम हमारा बचाया और कहा कि सुबह-सुबह उठेंगे तो फ्रेश मूड रहेगा। फ्रेश मन से आप सबकुछ कर सकते हैं और आपको अच्छा भी लगेगा। इसीलिए राजयोग कम्पलीट योग पद्धति है जिसमें सारे योग समाहित हैं।

जिसमें हमको एक-एक कर्म का राजा बनाया जाता है। एक-एक इंद्रिय का राजा बनाया जाता है। एक-एक स्थिति का राजा बनाया जाता है। ये नहीं कि राजयोग केवल योग है। लेकिन आपको हर कर्म का, हर स्थिति का, हर नियंत्रण का, हर चारों तरफ होने वाली घटनाओं का राजा, राजा मतलब साक्षीदृष्टा भाव से हर कर्म करता है फिर उसको भूलता है। ऐसे ही हम मन को समझ गये, चित्त को समझ गये, बुद्धि को समझ गये, रिलेशन को समझ गये, साथ-साथ हमारे शरीर में क्या घटना घट रही है, कैसी स्थिति बन रही है, वो सब समझ गये तो योग लगाना आसान हो गया ना!

- राजयोगी ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

इसलिए योग, राजयोग में पूरा इन्द्रिय संयम से लेकर परमात्मा के साथ जुड़ाव की स्थिति है। जब ये सब होगा तब जाके हमारे अन्दर पॉवर आयेगी। जैसे दुनिया में कहा जाता है ना कि कोई गुरु भी किसी को मंत्र देता था ना तो कहता था कि थोड़े-थोड़े दिन में मुझे सुनाओ कि आपने ये जो कर्म किया है ठीक किया है, कि नहीं किया। वैसे ही जब ये सारी चीज़ें परमात्मा को बार-बार हम बताते हैं रोज़, क्लास होती है रोज़, बताया जाता है कि हम कहाँ सही हैं, कहाँ गलत हैं, तो हम और इम्प्रूव करते हैं। अब एक बार हमको किसी ने बता दिया लेकिन अगर उसमें हम रोज़ चेंज नहीं कर रहे हैं, रोज़ अपने आपको अपग्रेड नहीं कर रहे हैं तो बोरियत होती है ना, इसीलिए थोड़े दिन बाद वो सारी चीज़ें छोड़ देते हैं। इसीलिए रोज़ दिनचर्या में, प्रतिदिन हमको ये सारी चीज़ों को ढालना पड़ता है। इससे जो स्थिति बनती है उस स्थिति में हमको हमारी उन्नति फील होती है। इसीलिए राजयोग कम्पलीट योग है। इस योग को करने के बाद कुछ भी बचता नहीं है। सब हमारा एक-दूसरे के साथ समाहित हो जाता है। लगता है कि हम कम्पलीट कर्म कर रहे हैं। तो करें राजयोग, रहें निरोग।

मन की बातें

-राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मेरा नाम संगीता है और दो साल से ब्रह्माकुमारी विद्यालय से जुड़ी हुई हूँ। मेरा सोलह साल का बेटा जो पढ़ने में काफी इंटेलिजेंट और हार्ड वर्किंग था। अभी वो घर से बाहर दूसरे टाउन में रांची में है और 12वीं क्लास में है, साथ-साथ आईआईटी की तैयारी भी कर रहा है। लेकिन कुछ निगेटिविटी उसके ऊपर हावी हो गई है। घर से बाहर जाते ही स्कूल और कोचिंग से कंप्लेन आने लगी है कि आपका बच्चा रेगुलर क्लास नहीं कर रहा है। धीरे-धीरे उसके नंबर भी कम आने लगे,वो लास्ट रैंक में रहता है। कृपया बतायें इसका क्या समाधान हो सकता है?

उत्तर : बिल्कुल इनके लिए ये चिंता का विषय है। इससे बच्चों में निराशा भी बहुत आती है कि क्या हो रहा है। क्योंकि आईआईटी तैयारी तो बहुत ही टफ होती है। तो इसमें एक प्रेशर तो रहता है। मुझे लगता है कि आयु बढ़ने के साथ मनुष्य के ब्रेन में भी कई चेंजेस हो रहे हैं आजकल। और ब्रेन के भी कुछ इम्पोर्टेंट पार्ट्स डैमेज हो रहे हैं जिसको लोग आम भाषा में कहते हैं कई सेल्स डेड हो रहे हैं। तो इस कारण से बहुत बच्चों को ये परिस्थिति आ रही है। हार्मोन्स का चेंज भी कभी-कभी छोटी आयु में होने लगता है उसके कारण भी बच्चों में पढ़ाई के प्रति ऐसा लगाव जैसा, कंसन्ट्रेशन की कमी, अरूचि जैसी होने लगती है। यही कारण लगते हैं और बाहर का इफेक्ट भी कुछ न कुछ होता ही है। तो इन्हें कुछ करना है तो इनकी माँ को इनके पास जाकर रहना चाहिए कुछ दिन। और रोज़ पाँच बार तो पानी चार्ज करके पिलाएं। पानी को सात बार दृष्टि दें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर उसको पिलाएं और ब्रेन को बिल्कुल परफेक्ट करने के लिए इनकी माँ इनके ब्रेन को दस मिनट रोज़ एनर्जी दे। एक टाइम फिक्स कर लें। सवेरे के टाइम जितना करेंगे 6 बजे तो ब्रेन भी कूल होता है, स्टेबल भी होता है तो ज्यादा इफेक्ट होगा। ब्रेन को एनर्जी देने की सिम्पल विधि है दोनों हाथों को मलेंगे और तीन बार अन्दर में याद करेंगे कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और फिर अपने हाथों में देखिए कितने अच्छे वायब्रेशन्स हैं। फिर दोनों हाथ अपने सिर पर लेफ्ट-राइट तरफ रख दें एक मिनट। आँखें बंद कर लें और बच्चे को कहें कि फील करो ये प्युअर एनर्जी तुम्हारे ब्रेन को नॉर्मल कर रही है। फिर से परफेक्ट बना रही है। कैपेबल बना रही है। ऐसा एक मिनट दें। ऐसा दस बार करेंगे। तो ब्रेन में कुछ गड़बड़ हो रही हो, हार्मोन्स का या जो कुछ ब्रेन की गति तो बहुत सूक्ष्म है उसे हम जान नहीं सकते। तो ब्रेन भी अच्छा हो जाएगा पहले जैसा और पानी चार्ज करके देने से हार्मोन्स का कोई डिस्ट्रबेन्स बॉडी में हो गया हो वो भी संतुलित हो जाएगा। और कई बार ऐसी सिचुएशन भी होती है कि माँ वहाँ बच्चे के पास हॉस्टल में नहीं जा सकती परमिशन नहीं है, या घर की बहुत सारी ज़िम्मेदारियां है तो डिस्टेंस हीलिंग भी हो सकती है। तो ऐसे में पानी चार्ज करना बच्चे को सीखा दें और ब्रेन को एनर्जी देने के लिए वहीं से हाथों को मलते हुए वही संकल्प करें और फील करें कि उसके पास पहुंच गई और उसके सिर पर मैंने हाथ रख दिया। जो प्रक्रिया उसको प्रैक्टिकल में जाकर करनी है वो दूर से भी की जा सकती है। लेकिन बहुत कंसन्ट्रेशन के साथ करनी पड़ेगी। बिल्कुल एकाग्रचित्त होकर। तो डेफिनेटली ये राजयोग तो करती ही होंगी। तो इसको दूसरी लैंग्वेज में हम कहेंगे कि फरिश्ता बनकर वहाँ पहुंच गई। उसके सिर पर हाथ रख दिया और उसको एनर्जी दे रही हूँ। तो इसका भी इफेक्ट बहुत सुंदर होता है।

प्रश्न : मेरा नाम ऋषि है। मेरी वाइफ बार-बार हाथ धोने से परेशान है। वो कोई भी चीज़ को छूने से पहले हाथ को वॉश करती है और डे बाय डे उनकी ये जो तकलीफ है वो बढ़ती ही जा रही है। वहम भी बढ़ता चला जा रहा है। बहुत डिप्रेशन में है और बहुत वीक होती जा रही है। हमने आपका टीवी चैनल देखा और एक नई उम्मीद जागी है। कृपया करके सजेस्ट करें कि हम क्या करें इसके लिए?

उत्तर : इसे छूआछूत की बीमारी कहते हैं। एक छोटा-सा सजेशन मैं इनको दूंगा कि सवेरे उठते ही ये लिखें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इससे उनके थॉट्स में बहुत पॉवर आयेगी। उनको जो इच्छा होती है कि हाथ धोऊं तो उसको ये कन्ट्रोल कर पाएंगी। दूसरा रात को सोने से पहले 108 बार ये लिखें कि मैं एक महान आत्मा हूँ इससे उनको जो डिप्रेशन जैसा हो रहा है इससे वो मुक्त हो जाएंगी। लेकिन इन दोनों में से कोई एक पति या पत्नी आधा घंटा रोज़ योगदान अवश्य करें। यदि पत्नी खुद करती हैं तो वो अपने लिए योगाभ्यास करें। यदि नहीं करती तो इनका पति इनके लिए करे। आधा घंटा। ताकि यदि कोई भी ऐसी-वैसी बात है तो वो भी समाप्त हो जाए। इसमें होम्योपैथी मेडिसिन भी वर्क करती है। आप इसके साथ-साथ वो भी ले सकते हैं।

प्रश्न : मेरा नाम ज्योत्सना है। मैं एक महिला को जानती हूं जो कहीं भी चलते-फिरते उसे एक दौरा-सा पड़ता है, दो मिनट के लिए ही। और उसके सामने जो भी चीज़ होती है उससे वो हाथ मलने लगती है। यदि गैस पर तवा चढ़ा हुआ है वो गर्म है तो उसपर भी वो हाथ मलने लगती है। एमआरआई, सीटी स्कैन कराया गया है लेकिन सबकुछ नॉर्मल आता है। कृपया कोई आध्यात्मिक उपाय बताएं ताकि इससे वो निजात पा सकें।

उत्तर : इसे सुनकर तो ऐसा लगता है कि ये तो ऐसा कुछ कर नहीं पाएंगी। लेकिन दूसरों को इसके लिए करना पड़ेगा। एक तो पानी चार्ज करके पिलाना और दूसरा ब्रेन को एनर्जी देना। हम चर्चा कर चुके हैं कि ब्रेन को एनर्जी कैसे दी जाती है हाथों के द्वारा। और पाँच-सात बार पानी को चार्ज करके पिलाना। इनका जो शुभचिंतक है उनको इनके लिए आधा घंटा रोज़ योग करना चाहिए वो भी तीन मास तक।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

6 ब्रह्माकुमारी बहनों ने किया विश्व परिवर्तन की सेवा में आजीवन समर्पित

चंडीगढ़-सेक्टर 33। राजयोग भवन में इस पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, पंजाब ज़ोनल हेड राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी,फरीदकोट व राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी,चंडीगढ़, राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी,निदेशक,सोनीपत रिट्रीट सेंटर, राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी,मुख्य संचालिका,सेक्टर-15 व पंचकुला सेवाकेन्द्र तथा राजयोगिनी ब्र.कु. विजय दीदी,मुख्य संचालिका,जींद मंचासीन मुख्य अतिथि के रूप में रहीं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय चीफ जस्टिस दया चौधरी की गरिमामयी उपस्थिति ने समारोह की शोभा को और बढ़ाया। राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि जब माता-पिता अपनी कन्या के लिए वर चुनते हैं तो वे उसके गुण, घर और परिवार को देखते हैं। फिर भी यह निश्चित नहीं होता कि कन्या सदा सुखी रहेगी। किंतु इस अलौकिक एवं दिव्य समर्पण समारोह के माध्यम से कन्या को स्वयं परमपिता, जगत नियंता परमात्मा ही वर के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि जहाँ तक घर की बात है तो विश्व के 140देशों में फैले ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र ही कन्या के अपने घर हैं और परिवार इतना विशाल है कि 10,000 से अधिक समर्पित भाई-बहनें सेवाओं में लगे हुए हैं, जो एक-दूसरे को सहयोग देकर निरंतर आगे बढ़ाते हैं। वहीं राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी ने कहा कि इस संस्थान में केवल वही कन्याएं समर्पित होती हैं जिन्हें स्वयं परमात्मा द्वारा चुना गया होता है। ये वे आत्माएं होती हैं जो सेवा और त्याग के भाव को अपनाकर, परमात्मा के महावाक्यों का गहराई से मनन-चिंतन करती हैं तथा हर क्षण सेवा में तत्पर रहती हैं। आज का यह अवसर अत्यंत हर्ष का विषय है कि उन 6 कन्याओं का समर्पण स्वयं भगवान द्वारा स्वीकार हुआ है। राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी दीदी ने अपने सम्बोधन में समर्पित होने वाली बहनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज की स्वार्थपूर्ण दुनिया में, जहाँ लोग केवल अपने और अपनों के बारे में सोचते हैं, इन बहनों ने पूरे समाज और विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत नृत्य से हुई। इसके पश्चात् छोटे-छोटे बच्चों ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से परमात्मा के प्रति समर्पण भाव को व्यक्त किया। समर्पण करने वाली 6 बहनों ने अपने जीवन को ईश्वरीय सेवा के लिए समर्पित करने की पावन प्रतिज्ञा की। इसी के साथ बहनों के माता-पिता ने भी सभा के समक्ष स्वेच्छा से अपनी कन्याओं को ईश्वरीय सेवा के मार्ग पर अग्रसर होने की स्वीकृति प्रदान की। समारोह के दौरान सम्बन्धियों का स्नेह मिलन कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें परिवारजनों ने भाव विभोर होकर बहनों को शुभकामनाएं दीं। मंच संचालन ब्र.कु. कविता ने किया।

त्रिदिवसीय मीडिया महासम्मेलन में 400 मीडियाकर्मी ने लिया भाग

माउंट आबू से सत्य व शान्ति का संदेश मिलता है - सांसद बराला

ज्ञान सरोवर-माउंट आबू(राज.)। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू में संस्था के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित महासम्मेलन में देशभर के दिग्गज पत्रकार, चिंतक, विचारक, मीडिया शिक्षक ने मिलकर चिंतन-मंथन किया। उद्घाटन सत्र में "वैश्विक शान्ति की आवश्यकता में मीडिया की भूमिका" विषय पर देश भर से पधारे विद्वान वक्ताओं ने अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने कहा कि मैं माउंट आबू को दुनिया की सबसे दिव्य भूमि कहना चाहता हूँ। यहाँ ब्रह्माकुमारीज़ में आने के बाद मन शान्त, बुद्धि स्थिर और प्रसन्नता का अनुभव हुआ। यह दुनिया में अपने आप में एक अनोखी संस्था है। विश्व में नारी सशक्तिकरण का इससे अच्छा उदाहरण हो ही नहीं सकता। इसने नये मानदंड स्थापित किए हैं। 140 देशों में यह संस्था परमात्मा के सन्देश को पहुंचाने का कार्य कर रही है। यह संस्था आत्मा की शुद्धि का रहस्य भी हमको समझा रही है। जिसने इसे समझा वो तर गया। यहाँ आत्मा से परिचित करवाना और परमात्मा से कैसे आत्मसात हो, यह समझाने का कार्य भी ब्रह्माकुमारीज़ कर रही है। वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए मीडिया की ज़िम्मेदारी बड़ी हो जाती है। आप केवल खबर नहीं देते, बल्कि दृष्टि भी देते हैं। माउंट आबू से शान्ति का, सत्य का संदेश मिलता है और मीडिया इसे घर-घर में पहुंचा सकती है। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. मानसिंह परमार ने संबोधित करते हुए कहा कि जब आप अपने कर्मस्थल पर लौटें तो एक नया संकल्प लेकर लौटें कि हम विश्व शान्ति में क्या योगदान दे सकते हैं। ये भी सच है कि मीडिया का कार्य सत्य सबके सामने रखना है, लेकिन सत्य दिखाते वक्त उसे संवेदनशील भी होना पड़ेगा। मीडिया प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. सरला दीदी ने कहा कि दूसरों के प्रति शुभभावना और शुभकामना का भाव रखना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव तथा मीडिया विंग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय 90 वर्षों से यह संदेश दे रहा है, सारा विश्व एक परिवार है। आप यहाँ ऐसे समझें कि आप अपने घर में हैं। यहाँ शांति का जितना अनुभव कर सकते हैं, इन तीन दिनों में आप करें। नई दिल्ली डीडी न्यूज़ के सलाहकार संपादक मनोष बाजपेई ने कहा कि समाज में जो बीमारी है, उसका डायग्नोस करना बहुत जरूरी है। कथनी और करनी में अंतर होगा तो बहुत दिक्कत होगी। जीवन में भौतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन बहुत जरूरी है। दैनिक ट्रिब्यून के संपादक नरेश कौशल,चंडीगढ़ ने कहा कि मीडिया की सकारात्मक भूमिका समय की जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिक चिंतन के माध्यम से विश्व की बेहतरी के लिए काम कर रही है। जो हमें उसे आगे बढ़ाना होगा। तान्या पटनायक,संपादक द संबाद एंड कनक टीवी,भुवनेश्वर ने कहा कि आज के माहौल में मीडिया का रोल बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें उन ज़िम्मेदारियों का निर्वहन पारदर्शिता से करना चाहिए। दैनिक देशोन्नति के संपादक डॉ. राजेश राजौरे,बुलढाणा की पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मधुरवाणी ग्रुप ने स्वागत गीत से समां बांध दिया। डायमंड डांस ग्रुप की कुमारी नीता ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर देश भर से आये अथितियों को भाव विभोर कर दिया। मीडिया विंग की छत्तीसगढ़ राज्य समन्वयक ब्र.कु. मंजू दीदी ने उद्घाटन सत्र का सफल संचालन किया।

शांति हमारा संस्कार है - सुदेश दीदी

ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी ने कहा कि विश्व शांति की बात इसलिए कर रहे हैं क्योंकि सारा विश्व हमारा परिवार है। भारत शांति का दूत है। हम भारत माँ के लाल, हमारे अंदर वो शांति की शक्ति है। शांति हमारा संस्कार है। आत्मा को शांति चाहिए। जब तक हमने बीज को नहीं सींचा है, तब तक वो फल नहीं देगा। बीज को धरती चाहिए, जल चाहिए, सूर्य की शक्ति चाहिए। भारत भूमि की महिमा है यह फूलों का बगीचा था, यहाँ श्री लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। शांति आएगी जब हम उसे प्रैक्टिकल में लाएंगे।

शांति की अनुभूति का आधार मेडिटेशन

एजुकेशन विंग की उपाध्यक्षा वरिष्ठ राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। उन्होंने कहा कि शांति की अनुभूति का आधार मेडिटेशन है। पहले आत्मा अपने आपको पहचाने की मैं कौन हूँ। ओमशांति का अर्थ ही है कि मैं वही हूँ जिसका स्वधर्म शांति है। मैं शांति के धाम से सृष्टि रंगमंच पर अभिनय करने आई हूँ। मैं आत्मा शांति सागर परमपिता की संतान हूँ।

गलतियों से हार नहीं बल्कि स्वयं को सुधारने का अवसर मानें

नवा रायपुर-छ.ग.। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नवा रायपुर सेक्टर-20 स्थित 'एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड-शान्ति शिखर' देखने आये आर्मी स्कूल के बच्चों को ब्र.कु. अंशु दीदी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आत्मविश्वास सफलता की नींव है जो कि खुद की क्षमताओं और निर्णयों पर अटूट भरोसा रखने से उत्पन्न होती है। यह हमें जोखिम उठाने और चुनौतियों का सामना करने तथा लक्ष्य हासिल करने में मदद करता है। यह कोई जन्मजात गुण नहीं, बल्कि छोटे-छोटे लक्ष्य को पूरा करके और सकारात्मक सोच से विकसित किया जा सकने वाला कौशल(हुनर) है। उन्होंने आगे बताया कि जीवन के हर क्षेत्र में सफलता का सीधा सम्बन्ध उस व्यक्ति के आत्मविश्वास से जुड़ा होता है। विशेषज्ञों और सफल लोगों के अनुभव यह बतलाते हैं कि बुद्धिमत्ता या संसाधनों से भी आगे बढ़कर आत्मविश्वास ही वह शक्ति है जोकि एक साधारण व्यक्ति को असाधारण बनाती है। यह न केवल हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है बल्कि कठिन परिस्थितियों में हमें डटे रहने का साहस भी देता है। दीदी ने आगे कहा कि आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति न केवल खुद पर भरोसा करता है बल्कि अपने डर पर काबू पाकर जोखिम उठाने से भी नहीं डरता। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सकारात्मक रूप से आत्म-मंथन करना और छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें हासिल करना बहुत ज़रूरी है। असफलता से सीखें। गलतियों को स्वयं को सुधारने का अवसर मानें, उनसे हार नहीं मानें। उन्होंने कहा कि आत्मविश्वास रातों-रात नहीं आता। छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें पूरा करके अपना हौसला बढ़ाएं। अंत में मैं बस इतना ही कहूँगी कि मंज़िलें उन्हीं को मिलती हैं जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है। खुद पर भरोसा रखें, क्योंकि आप अपनी परिकल्पना से कहीं अधिक योग्य और बुद्धिमान हैं। मौके पर वरिष्ठ ब्र.कु. महेश भी उपस्थित रहे।

■ दादी की प्रथम पुण्य तिथि विश्व एकता के रूप में मनाई ■ देश-विदेश से हज़ारों चाहकों ने दादी को किया याद ■ दादी के सेवासाथियों ने सुनाए साथ के अनुभव

रूहानी नेतृत्व और आध्यात्मिक निर्माण की प्रेरक धरोहर : दादी रतनमोहिनी

शांतिवन-राज.। पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की प्रथम पुण्य तिथि विश्व एकता दिवस के रूप में मनाई गई। दादी की स्मृति में शांतिवन में बनाए गए **"ज्ञान रत्न स्तंभ"** पर देशभर से आये संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने पहुंच कर श्रद्धांजलि अर्पित की। डायमंड हॉल में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि दादी का जीवन योग, तपस्या, साधना की मिसाल था। दादी उन महान आत्माओं में से एक थीं जिन्होंने इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की वर्ष 1937 में स्थापना से लेकर वर्ष 2025 तक 89वर्ष की यात्रा की साक्षी रही हैं। 40से अधिक वर्षों तक आपने युवा प्रभाग की अध्यक्षा की भी जिम्मेदारी संभाली। आपके नेतृत्व में आध्यात्मिक जागृति हेतु युवा प्रभाग द्वारा देशभर में अनेक राष्ट्रीय युवा पदयात्रा, साइकिल यात्रा और अन्य अभियान चलाए गए। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने भी अपने अनुभव साझा किए। महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि दादी के साथ वर्षों तक सेवा करने का सौभाग्य मिला। दादी के जीवन से बहुत कुछ सीखा।

दादी रतनमोहिनी जी का जीवन सेवा, समर्पण और आध्यात्मिक जागरूकता का अनुपम उदाहरण रहा है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका के रूप में उन्होंने न केवल संगठन को सशक्त नेतृत्व प्रदान किया, बल्कि हजारों आत्माओं को एक श्रेष्ठ जीवन जीने की दिशा भी दी है। उनकी विशेषता थी - आध्यात्मिक ज्ञान को सरलता से समझाकर उसे जीवन में उतारने की प्रेरणा देना। दादी रतनमोहिनी जी ने अपने जीवन के प्रारंभ से ही ईश्वरीय सेवा को अपनाया और उसे अपना सर्वोच्च कर्तव्य माना। उनका मुख्य योगदान रहा - आध्यात्मिक शिक्षिकाओं को तैयार करना, उन्हें प्रशिक्षित करना और उन्हें एक सशक्त लीडर के रूप में विकसित करना। उनके मार्गदर्शन में तैयार हुई हजारों शिक्षिकाएं आज विश्व भर में सेवाकेन्द्रों का संचालन कर रही हैं और शांति, प्रेम तथा एकता का संदेश फैला रही हैं। उन्होंने देश-विदेश में व्यापक रूप से सेवा करते हुए विशेषकर युवाओं को आध्यात्मिकता से जोड़ा। उनके प्रेरक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक युवाओं ने अपने जीवन को श्रेष्ठ दिशा दी - कुछ ने पूर्ण समर्पण से सेवा की, तो कई ने गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी आध्यात्मिक मूल्यों को अपनाकर समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। दादी जी केवल एक प्रशासिका नहीं, बल्कि एक सच्ची आध्यात्मिक मार्गदर्शक थीं। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि सच्चा नेतृत्व वही है, जो स्वयं आदर्श बनकर दूसरों को भी श्रेष्ठता की राह पर चलने के लिए प्रेरित करे। उनके द्वारा तैयार की गई 'रूहानी फौज' आज विश्व को शांति, संतुलन और श्रेष्ठ जीवन का मार्ग दिखा रही है।

घाणेराव में कल्याण सरोवर शिलान्यास व शिवालय का किया भूमि पूजन

मानव जीवन के कल्याण व आत्मिक उत्थान का केंद्र बनेगा ''कल्याण सरोवर'': राज्यमंत्री देवासी

सादड़ी-राज.। घाणेराव में **"कल्याण सरोवर"** के शिलान्यास एवं शिवालय के भूमि पूजन समारोह का आयोजन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय माउंट आबू की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी के सानिध्य में श्रद्धा व उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों, ब्रह्माकुमारी संस्था के वरिष्ठ भाई-बहनें व बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। यहाँ शिवालय में 70 फीट उँचाई का शिवलिंग बनेगा। इसके अलावा शिव बाबा की झोपड़ी, नक्षत्र गार्डन जैसे कई कार्य आगामी दिनों में पूरे होंगे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बाली विधायक पुष्पेन्द्र सिंह राणावत ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था का आध्यात्मिक संदेश आमजन तक पहुंचे, यह आवश्यक है। उन्होंने बताया कि दो वर्ष पूर्व भूमि आवंटन करवाया गया था और अब यह कार्य साकार हो रहा है। उन्होंने इस प्रकल्प में सभी के जुड़ाव व सहभागिता को जरूरी बताते हुए मुख्य सड़क से सीसी सड़क निर्माण कराने की घोषणा भी की। राज्यमंत्री ओटाराम देवासी ने कहा कि यह स्थान मानव जीवन के कल्याण व आत्मिक उत्थान का केंद्र बनेगा। उन्होंने कहा कि यह आयोजन जनकल्याण और एकता के सूत्र में बांधने का माध्यम है। ब्रह्माकुमारी संस्था के सहयोग की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि सिरोही में केंद्र होने के कारण वे संस्था के कार्यों को नज़दीक से जानते हैं। उन्होंने पाली, जालोर और सिरोही के तीर्थ स्थलों के लिए हवाई पट्टी की आवश्यकता भी जताई, जिससे श्रद्धालुओं को सुविधा मिल सके। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में आध्यात्मिक जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि कल्याण सरोवर और शिवालय जैसे प्रकल्प मनुष्य को आत्मचिंतन, योग साधना और सकारात्मक जीवन मूल्यों की ओर प्रेरित करेंगे। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि इस पुण्य कार्य में सहयोग देकर इसे जनकल्याण का केंद्र बनाएं। कार्यक्रम में भामाशाहों ने महत्वपूर्ण सहयोग देने की घोषणा की। समारोह में ब्र.कु. सुचिता, ब्र.कु. कविता, घाणेराव प्रशासक चंद्रशेखर मेवाड़ा, समाजसेवी राजेश मेवाड़ा, विक्रम सिंह इंदा सहित ब्रह्माकुमारी सदस्य व ग्रामीण उपस्थित रहे।

- शिवालय में 70 फीट उँचाई का बनेगा शिवलिंग
- बनेंगे नक्षत्र गार्डन व बाबा की झोपड़ी
- आत्मिक उत्थान का केन्द्र बनेगा 'कल्याण सरोवर'

भारत है विविधता में एकता के सिद्धांत का प्रतीक

-विश्व जन सभा के महासचिव एंड्री बेल्यानिनोव

दिल्ली। भारत की राजधानी में प्रतिष्ठित हयात रीजेंसी होटल में शुरु हुए विश्व सार्वजनिक शिखर सम्मेलन में प्रमुख नीति निर्माताओं, राजनेताओं, व्यापारिक नेताओं, वैज्ञानिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को आंमत्रित किया गया। ताकि उन प्रमुख मूल्यों और कार्य योजनाओं पर चर्चा की जा सके जो मानवता के लिए एक शांतिपूर्ण, समृद्ध और टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित कर सके। भारत को शिखर सम्मेलन के आयोजन स्थल के रूप में चुना जाना कोई संयोग नहीं था। विश्व जन सभा के महासचिव एंड्री बेल्यानिनोव ने कहा, "भारत, जो विविधता में एकता के सिद्धांत का प्रतीक है, हमारे साझा भविष्य को आकार देने वाले मूल्यों पर संवाद के लिए एक मंच बन जाता है।" ब्रिक्स सीसीआई के उपाध्यक्ष समीप शास्त्री ने कहा, "भारत हमेशा से मानता आया है कि दुनिया एक परिवार है। यह शिखर सम्मेलन इसी सोच को साकार करता है, क्योंकि हम यह पता लगाएंगे कि कैसे हमारे विविध दृष्टिकोण सभी के लिए अधिक समावेशी और टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।" ब्रह्माकुमारीज़ महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी और ब्रह्माकुमारीज़,सेंट पीटर्सबर्ग,रूस की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी को इस अंतर्राष्ट्रीय मंच की आयोजन समिति द्वारा शिखर सम्मेलन के कार्यक्रमों में प्रतिभागी और वक्ता के रूप में आधिकारिक तौर पर आमंत्रित किया गया था।

विश्व जन सभा की वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ परिषद की बैठक में बोलते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने रेखांकित किया, "जब हमारे व्यक्तित्व में सत्यनिष्ठा होती है, जब हम स्वयं को केवल एक व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के एक भाग के रूप में देखते हैं, तब एकता और सद्भाव के विश्व का पुनर्निर्माण करना आसान हो जाता है। राजयोग ध्यान हमें अपने भीतर की उस दिव्यता को जगाने में सक्षम बनाता है या यूं कहें कि हमें अपने परमपिता ईश्वर की सच्ची छवि और स्वरूप प्राप्त करने में मदद करता है।" विश्व सार्वजनिक शिखर सम्मेलन के अंतर्गत मिरांडा हाउस कॉलेज,दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित गोलमेज सम्मेलन "आध्यात्मिक एकता पारंपरिक मूल्यों से शांति की संस्कृति तक" में प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी ने विशेष रूप से ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा को याद किया, जिनकी शांति और वैश्विक एकता प्राप्त करने में महिलाओं की अनूठी भूमिका की दूरदृष्टि अपने समय से बहुत आगे थी। उन्होंने कहा, "विश्व की वर्तमान घटनाओं से हमें उनकी दूरदर्शिता का पुख्ता प्रमाण मिल रहा है। आज की दुनिया को एक ही परिवार के सदस्यों के रूप में सभी के प्रति मातृत्व भाव की सख्त ज़रूरत है।" ब्र.कु. हुसैन,ओआरसी और ब्र.कु. तमन्ना,शक्ति नगर,दिल्ली को भी शिखर सम्मेलन के कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला।

चक्रधारी दीदी और संतोष दीदी ने मार्च 2026 में दिल्ली, भारत में आयोजित विश्व जन शिखर सम्मेलन(विश्व जन सभा और ब्रिक्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री) में लिया भाग

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 23th TO 24th Each Month.
स्वामी - आर.ई.आर.एफ. प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नर्सिंगानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, 1. 801-1, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शान्तिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org